2

बच्चों ने प्रगति की

शनिवार, 10 अक्तूबर

सभी बच्चों को, और खासकर इन बच्चों को जिनके अनुभव बेहद सीमित हैं, कई तरह की रुचियों से जुड़ने की ज़रूरत है ताकि उनके जीवन समृद्ध हों और वे अपना समय सार्थक कार्यों में बिता सकें। मैंने अब तक यह कोशिश की है कि हम मिलजुलकर अपने स्कूल भवन और उसके मैदान को सुन्दर बनाएँ, पुस्तकालय के पीरियड में पढ़ने का आनन्द लें और वानिकी क्लब के माध्यम से अपने आसपास के प्राकृतिक परिवेश के बारे में और जानें। इस समुदाय का एक और समृद्ध संसाधन है स्थानीय इण्डियन लोगों का इतिहास। यह भण्डार मैंने बच्चों के लिए खोल दिया है, पर इस अनुभव को ज़्यादा वास्तविक बनाने के लिए मुझे उन्हें एक इण्डियन-यात्रा पर ले जाना होगा। आज मैं कैथरीन, फ्रैंक, रूथ और सोफिया को ले गई। हम एक शैलाश्रय तक गए और तब "रिवर रोड" पर बढ़े जो किसी जमाने में इण्डियनों का रास्ता हुआ करता था। मैंने उन्हें इस रास्ते के बारे में बताया, इण्डियनों के पुराने मुखिया चीफ टामेनुण्ड् की बात की, तथा उनकी बस्ती और उस वृक्ष की बात बताई जिसके नीचे वे अपनी बैठक करते थे। मिन्सी कबीला, जो कभी यहाँ बसता था, के बारे में जो कुछ बच्चों ने पढ़ा था, उस पर भी हमने चर्चा की।

सोमवार, 12 अक्तूबर

आज छुट्टी वाले दिन की सुबह मैं "अ" समूह के शेष बच्चों (रैल्फ, एना, ओल्गा और डॉरिस) को भी इण्डियन-यात्रा पर ले गई। वे प्रथम समूह से अधिक चुप थे। ओल्गा के लिए इतनी पास की यात्रा करना भी नया अनुभव था। बातचीत इण्डियनों और प्रकृति की ओर मुड़ी। जब से वानिकी क्लब में मैंने

पृथ्वी के इस भाग की रचना की कहानी सुनाई है, रैल्फ जीवाश्म ढूँढने में खास रुचि ले रहा है। रैल्फ ने गौर किया कि रिवर रोड के पत्थरों की परतें खास तरह की हैं, और उसने इस बारे में पूछा। मैंने बच्चों से ही उत्तर निकलवाने की कोशिश की और पाया कि वे भू-विकास के बारे में काफी समझते हैं।

आज शाम वानिकी क्लब के हम बीस सदस्य पिकनिक पर गए। बच्चों ने खाने के बाद सफाई में मदद की और हमने कूड़ा-कचरा जला दिया। रैल्फ और फ्रैंक ने आग पर एक बड़ी-सी लकड़ी डाल दी और हम आग के इर्द-गिर्द आराम से बैठ गए। कुछ देर चुप्पी रही। चीड़ के जंगल की खुशबू हवा में तैर रही थी। हम उसे सूँघते रहे और झरने की कलकल सुनते रहे। हाई स्कूल की एक लड़की ने कुछ मज़ेदार किस्से सुनाए। तब मैंने समूह को इण्डियनों के आख्यान सुनाए और स्कनी वुण्डी की कहानियाँ भी। इन कथाओं के लिए इससे उपयुक्त पृष्ठभूमि हो नहीं सकती थी, और लगा मानो मेरे अन्तस में इण्डियन कथावाचक की आत्मा समा गई हो: "सुनो, मेरे बच्चो, मैं नायक स्कनी वुण्डी की शौर्य गाथाएँ कहती हूँ जिसने दलदल की डाकनियों का नाश किया और उन्हें नरकट के टीलों में बदल डाला।"

इसके बाद हमने कई तरह के गीत गाए – शिविर गीत, काउबॉय गीत, पुराने पसन्दीदा गीत, कई बढ़िया लोकप्रिय धुनें। पर जल्दी ही घर लौटने का समय हो गया। श्री थॉमसन अपना बड़ा ट्रक लाए और बच्चों को उनके घरों तक पहुँचा आए।

मंगलवार, 13 अक्तूबर

आज दिन भर बार-बार "पिकनिक" शब्द कानों में पड़ता रहा। सभी एक-दूसरे के प्रति नेह जताते रहे। उस पहले दिन से हम काफी दूर निकल आए हैं जब हरेक अपनी निजी राह पकड़ता था!

बिचले समूह ने अपनी इतिहास पुस्तकों की दूसरी इकाई प्रारम्भ की। हमने समस्याओं के अर्थ पर चर्चा की। प्रारम्भिक उपनिवेशियों की इस इकाई में तीन मुख्य समस्याएँ हैं। प्रत्येक मुख्य समस्या सुलझाने के लिए उन्हें अधिक विस्तृत प्रश्न दिए जाएँगे। जब इन सवालों के जवाब मिल जाएँगे तब वे उनके सहारे एक कहानी लिखेंगे जो संक्षेप में समस्या का समाधान रखेगी। मैं कोशिश कर

रही हूँ कि बच्चे किसी एक सवाल का जवाब ढूँढने के बदले उस समस्या को पहचानें जिसका समाधान उन्हें पाना है। बच्चों के लिए यह दूसरा कदम होगा।

बुधवार, 14 अक्तूबर

जितनी बार आँखें काम से ऊपर उठाईं मुझे कई खाली कुर्सियाँ नज़र आईं। सामने वाले आँगन में छोटे लड़के नारंगियों के खाली खोखों से एक खेलघर बना रहे थे। यह सब सुबह योजना बनाने के बाद हो रहा था। नन्ही लड़कियाँ अपनी गुड़ियों के लिए कपड़े बना रही थीं। कुछ बड़े बच्चे मनोरंजन कार्यक्रम के विज्ञापन पोस्टर बना रहे थे या चित्रवल्लरी के शीर्षक लिख रहे थे। जो मेज़ों पर जमे थे वे गणित, वर्तनी या पठन का काम कर रहे थे।

शारीरिक शिक्षा में सब ठीक चल रहा है। अब हम दैनिक स्कोर की बजाय साप्ताहिक स्कोर रखने लगे हैं ताकि हारने वालों को अगले दिन फिर से मौका मिले। कल जो टोली बेसबॉल में हारी थी आज लॉन्ग बॉल में जीत गई है, सो दोनों टोलियों में मात्र एक अंक का अन्तर है।

गुरुवार, 15 अक्तूबर

दिन भर इतनी व्यस्तता रहती है कि हमें नाटक का अभ्यास करने का समय नहीं मिल पा रहा। बच्चों ने बखुशी दोपहर का समय इसमें लगाना शुरू किया है। रिहर्सल खराब चल रहे हैं। इण्डियन नृत्य में बच्चों को मज़ा आता है, पर वे उसे अनगढ़ तरीके से करते हैं। वे इतने शर्मीले हैं कि हर बार असहज हो ठिठियाने लगते हैं। ऐसे वक्त हमें रुककर धीरज से दोबारा शुरुआत करने का इन्तज़ार करना पड़ता है। मैं तो इस रंगारंग संध्या को लेकर भयभीत हूँ।

शुक्रवार, 16 अक्तूबर

आज सुबह विज्ञान के पीरियड में मैं बच्चों को पैदल घुमाने ले गई ताकि वे पतझड़ के पत्ते देख लें इससे पहले कि पेड़ नंगे हो जाएँ। हमने कई वृक्षों को पहचाना और "क्वेकिंग एस्पेन" को अपने वृक्ष मित्रों की सूची में जोड़ा। हमने देखा कि भिन्न-भिन्न प्रकार के बलूत के वृक्षों के रंग एक-दूसरे से भिन्न हैं। पहाड़ी के ऊपर एण्ड्रयूस् के घर के पास के पेड़ों को हमने दूर से ही आकार और रंग के आधार पर पहचानने की कोशिश की। ट्यूलिप के पौधे अलग से नज़र

आ रहे थे। सदाबहार वृक्ष समूह में नीले स्प्रूस, सरल वृक्ष, देवदारु व पीली चीड़ के वृक्षों को हमने पहचान लिया।

स्वास्थ्य के पीरियड में हमने व्यक्तिगत साफ-सफाई की आवश्यकता पर बात की और इस पर भी कि कैसे साफ रहा जाए। बड़े बच्चे त्वचा की संरचना के बारे में कुछ सीख सके। इस सबके बाद इतना ही समय बचा था कि वे चर्चा का सार-संक्षेप अपनी कॉपियों में दर्ज कर लें। यद्यपि चर्चा में सब बच्चे भाग लेते हैं, पर लिखने की उम्मीद उनसे उनकी योग्यता के अनुपात में ही रखी जाती है। छोटे बच्चे चित्र-पुस्तकें बना रहे हैं।

हमारे सहायक क्लब की बैठक साधारण पर अच्छी थी। हमने अगले चार सप्ताहों के लिए नए पदाधिकारी चुने। हम हर माह नए पदाधिकारी चुनेंगे ताकि ज़्यादा से ज़्यादा बच्चों को नेतृत्व करने का मौका मिले। इस बार रैल्फ अध्यक्ष बना है, ओल्गा उपाध्यक्ष और एना सचिव। रैल्फ ने चुनाव के बाद बैठक की कार्यवाही सम्हाली और उसमें नेतृत्व की सम्भावना नज़र आती है। हमने इस बात पर चर्चा की कि वे अपने द्वारा बनाए गए नियमों का स्वयं कितना पालन करते हैं। रैल्फ को लगा कि हमने पुराने नियम अच्छी तरह सीख लिए हैं सो हमें नए नियम बनाने चाहिए, खासकर साथ-साथ खेलने के सम्बन्ध में। एक पूरा सप्ताह गुज़र चुका है और कोई झगड़ा नहीं हुआ है। मैंने सुझाया कि हम जो अच्छी आदतें सीख रहे हैं उनकी सूची बना लें और कुछ समय उन पर ध्यान दें: हम और शान्ति से काम करें ताकि दूसरों के काम में कोई खलल न पड़े और हम अपनी कक्षा और अपने काम को साफ तथा व्यवस्थित रखें।

सोमवार, 19 अक्तूबर

छोटे बच्चे घरों पर पुस्तिकाएँ बना रहे हैं जिनमें विभिन्न प्रकार के घरों के बारे में कहानियाँ होंगी। आज उन्होंने अपनी पहली कहानी लिखी और पहला चित्र बनाया। हमने पहले कहानियाँ "कहीं" और मैंने ब्लैकबोर्ड पर वे शब्द लिखे जिनकी वर्तनी उन्हें जाननी थी। मैं कोशिश कर रही हूँ कि वे लेखन में अधिक आत्मनिर्भर हो जाएँ।

बुधवार, 21 अक्तूबर

आज सुबह रूथ ने शुक्रवार की हमारी सैर पर लिखी कविता मुझे दी।

सैर

हम सैर पर गए और हमने खूब बातें कीं।
हमने पत्तों को देखा ताकि पेड़ों को समझ सकें।
हमने मोड़ीं अपनी हड्डियाँ पत्थरों की खोज में।

मैं रूथ की कविता को एक बड़े कागज़ पर लिख, चित्रों से सजा, सूचना-पट्ट पर लगा दूँगी। सम्भव है दूसरे भी इससे प्रेरित हों। बाद में शायद हम एक अखबार की बात भी सोच सकते हैं जिसमें ऐसी रचनात्मक चेष्टाएँ शामिल हों।

गुरुवार, 22 अक्तूबर

आज मार्था सभी प्राथमिक बच्चों को बाहर ले गई और कुछ देर उन्हें पढ़कर सुनाती रही। एक बार जब मैं यह देखने बाहर गई कि सब ठीक-ठाक तो चल रहा है, मैंने पाया कि वह जो कुछ पढ़कर सुनाया था उस पर प्रश्न पूछ रही है। मैं कुछ देर सुनती रही और मैंने पाया कि जैसी चर्चा मैं करवा पाती हूँ उससे कहीं जीवन्त चर्चा यहाँ चल रही थी!

सुबह के शारीरिक शिक्षा पीरियड में विलियम ने पूछा कि क्या वह हमें एक खेल सिखा सकता है। उसने खेल अच्छी तरह समझाया और हमने कई सवाल पूछे। खेल था "लोमड़ी, क्या तुम तैयार हो?" सच, हमें बड़ा मज़ा आया। पिछले कुछ समय से बड़ी कक्षाओं के बच्चे स्कूल से पहले ही कोई खेल शुरू कर देते हैं।

शुक्रवार, 23 अक्तूबर

आज सुबह एना एक कविता लाई और उसने जानना चाहा कि क्या वह रूथ की कविता की तरह उसे चित्रों से सजाने के लिए कागज़ घर ले जा सकती है?

आज सुबह रुक-रुककर बरसात होती रही। पर लड़कों ने फिर भी लकड़ियाँ, ठूँठ, रंगीन पत्तों की टहनियाँ, काई और पत्थर इकट्ठे किए ताकि इण्डियन लोगों वाले नाटक के दृश्य बनाए जा सकें। कई बच्चों ने कहा कि इतना सुन्दर मंच उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। बिचले समूह ने अपने नाटक को "हमारी इतिहास पुस्तक में से कोलम्बस के जीवन के चित्र" शीर्षक दिया है। उन्होंने भूर्ज की लकड़ी से एक बड़ा-सा चित्र-फ्रेम बनाया है जिसके अन्दर ही नाटक खेला जाएगा। यह फ्रेम मंच में सामने वाले हिस्से में रखा गया है और उसे पर्दे से ढक

दिया गया है। नाटक खत्म होने पर बच्चे इस फ्रेम को हटा देंगे ताकि इण्डियन लोगों वाले नाटक के लिए मंच खाली हो जाए। लड़कियाँ फ्रेम के पर्दे व्यवस्थित कर रही थीं कि वॉरेन आया और कहने लगा कि वे काम को कठिन बना रही हैं। उसने बड़े उम्दा सुझाव दिए। एक झटके में समूह में वॉरेन की साख में इज़ाफा हो गया।

नाटक वाले पीरियड के बाद हम अनौपचारिक तरीके से बैठ गए और मैंने उन्हें मिल्ने की "वेन वी वर वेरी यंग" (जब हम बहुत छोटे थे) से पढ़कर कविताएँ सुनाईं। उन्होंने कई कविताएँ दोहराने को कहा, खासकर वह जिसमें एक छोटा लड़का है जिसके पास एक पाई है और जो उससे एक खरगोश खरीदना चाहता है। यह कविता मुझे चार बार पढ़नी पड़ी और बच्चे टेक को मेरे साथ दोहराने लगे।

नन्हे-मुन्ने घर लौटते उससे पहले मैंने उन्हें "उपदेश" दिया कि आम तौर पर हम किसी कार्यक्रम के दौरान कैसा आचरण करते हैं। जब मैं उनसे गम्भीरता से कोई बात करती हूँ तो वे मुझे ऐसे घूरते हैं कि मेरा दिल उन्हें गले से लिपटाने का हो आता है।

आज शाम के रंगारंग कार्यक्रम के लिए तकरीबन पचास लोग इकट्ठे हुए, जिनमें बच्चे भी शामिल थे। हमने कार्यक्रम समूह गान से आरम्भ किया, और इन लोगों को गाना कितना पसन्द है! हमने पुराने लोकप्रिय गीत गाए और वह गीत भी जो मैंने सिखाया है, "स्वीटली सिंग्स द डॉन्की" (मधुर गीत गाता है गधा)। प्राथमिक बच्चों ने एक समूह गीत गाया और खूब तालियाँ बजीं। वे बाग-बाग हो गए। कार्यक्रम खत्म होने के बाद भी लोग देर तक रुके रहे। बच्चों ने अपने अभिभावकों और दोस्तों को हमारे कक्ष में रखी रोचक वस्तुएँ दिखाईं और उन्हें हमारे काम के बारे में बताया। श्रीमती हिल को यह जान सुखद आश्चर्य हुआ कि बच्चे यह सब कुछ करने को आतुर थे। घर के बने केक और चॉकलेट से हमने दस डॉलर कमाए।

पिछले सप्ताह भर कई बच्चों और कुछ अभिभावकों ने मुझे चेतावनी दी थी कि कुछ उजड्ड नवयुवक स्कूल के मनोरंजन कार्यक्रम में बाधा डालते रहे हैं। इनमें से दो मुख्य लड़के एडवर्ड के भाई हैं। आज शाम कार्यक्रम प्रारम्भ करने से पहले मैंने उनसे बात की और उन्हें बताया कि आज के नाटक हमारे लड़के-लड़कियों

के लिए बेहद महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने इसके लिए दिनों-दिन मेहनत की है ताकि वे सबको प्रभावित कर सकें। पर उनकी आवाज़ें कोमल हैं। इसलिए क्या वे मेहरबानी करके दरवाज़े के पास खड़े होकर यह सुनिश्चित कर सकेंगे कि कोई बीच में ज़ोर से न बोले। सौभाग्य से मेरा उपाय कारगर रहा और हमारा कार्यक्रम शान्ति और आनन्द से हो सका।

सोमवार, 26 अक्तूबर

आज बाहर मौसम ठण्डा था, तेज़ हवाएँ भी चल रही थीं, पर इसके विपरीत अन्दर बड़ा सुहाना लग रहा था। थोड़ी देर हमने बारिश को पेड़ों से पत्तियाँ "नोचते" देखा और आसपास के जंगल में हवा का संगीत सुना। सब इतना अच्छा लग रहा था। कक्षाएँ शुरू होने से पहले हमने शुक्रवार के फैलावे को समेटा और नौ बजे तक हम एक साफ-सुथरे कमरे में पढ़ाई के लिए तैयार थे।

सामेटिस बच्चे शहर में अपने पिता के पास रहने जाने वाले हैं और मैं बहुत दुखी हूँ। वे अब जाकर मुक्त और सहज अनुभव करने लगे हैं और उन्हें फिर से नई जगह जाकर तालमेल बैठाना होगा।

अपने रोज़मर्रा के कामों पर लौटना जहाँ एक ओर शान्त और व्यवस्थित लग रहा था, वहीं कुछ उबाऊ भी।

बुधवार, 28 अक्तूबर

बच्चों को काम करते देखने के लिए जब-तब कुछ पल निकाल पाना मुझे लाभदायक लग रहा है। खासकर उन बच्चों के प्रति मैं अधिक सचेत हो पाती हूँ जो सामान्यतः बिना दूसरों का ध्यान आकृष्ट किए चुपचाप अपना काम करते हैं। उदाहरण के लिए, एडवर्ड कोई शरारत नहीं करता, पर किताबों को घूरते हुए काफी समय बर्बाद करता है क्योंकि वह ठीक से पढ़ नहीं पाता। मुझे उसे पढ़ने को आसान किताबें देनी चाहिए। रैल्फ भी घर से लाई "चीज़ों" से खेलने में समय ज़ाया करता है, वह उन्हें अपनी मेज़ में रखता है। ज़ाहिर है कि उसे ये चीज़ें स्कूल के काम से अधिक चुनौतीपूर्ण लगती हैं। मेरी और ओल्गा दिल लगाकर मेहनत करती हैं, और हमेशा ही उम्मीद से अधिक काम करती हैं। फ्रैंक भी ठीक यही करता है, यद्यपि उसके काम में इतनी सफाई नहीं होती। हेलेन अपने सभी पड़ोसियों से उलझती रहती है। रूथ का ठिठियाना रुकता ही नहीं।

मैं जब भी अवलोकन करने बैठती हूँ तो शुरुआती नन्हों को देख सदा मुझमें अपराध बोध जगता है। मैं उनके साथ कम समय बिता पाती हूँ, अतः वे कितने कुछ से वंचित रह जाते हैं। नतीजा यह होता है कि वे काफी समय सिर्फ बैठे रहते हैं। उन्हें गाना, खेलना, नाटक करना, चित्र बनाना चाहिए। जितना वे कर पाते हैं मुझे उससे कहीं अधिक अनुभव उपलब्ध करवाने के रास्ते तलाशने होंगे।

आज स्कूल के बाद 4-एच सिलाई क्लब की पहली बैठक हुई। बिचले और बड़े समूह की सभी लड़कियाँ और चार हाई स्कूल की लड़कियाँ उपस्थित थीं। हमने काम से सम्बन्धित छोटी-सी बैठक की और पदाधिकारी चुने। हमने अपनी परियोजनाएँ बनाईं। छोटी लड़कियाँ मशीन से सीकर गमलों की लटकनें बनाएँगी ताकि वे मशीन चलाना सीख सकें। शेष लड़कियाँ शमीज़ें बनाएँगी जिनके नमूने हमें काउंटी गृह प्रदर्शिका मिस मून ने उपलब्ध करवाए हैं।

गुरुवार, 29 अक्तूबर

आज स्कूल के बाद माताओं के साथ दूसरी बैठक हुई। केवल श्रीमती हिल, श्रीमती ओल्सेउस्की, श्रीमती कार्टराइट और श्रीमती थॉमसन ही आईं। मुझे कुछ निराशा हुई, पर उन्होंने बताया कि यह उनके लिए बेहद व्यस्तता का समय है। हमने शिक्षा सप्ताह की योजना बनाई। उस सप्ताह माताएँ गुरुवार को दोपहर बारह बजे स्कूल आ जाएँगी, जब बच्चों की छुट्टी कर दी जाएगी, और शाम तीन बजे तक रुकेंगी। बच्चों के घर चले जाने के बाद हम उनके अवलोकनों पर चर्चा करेंगे।

शुक्रवार, 30 अक्तूबर

आज बड़े बच्चों ने नई कॉपियाँ बनाईं जिनमें वे भाषा और वर्तनी की अपनी गलतियों का रिकार्ड रखेंगे और सही वर्तनी दर्ज करेंगे। इस कॉपी में वे उन नए शब्दों को भी दर्ज करेंगे जिनका उपयोग करना वे सीख रहे हैं और उन किताबों के नाम भी लिखेंगे जो उन्होंने पढ़ ली हैं। वे जिस उत्साह से काम में जुटे उससे मेरा मन खिल उठा।

वानिकी क्लब की बैठक में बच्चों ने अपनी कॉपी में शिलाखण्डों की वह कुंजी उतार ली जो मैंने उनके लिए तैयार की थी। फिर अभ्यास सत्र में उन्होंने कुंजी का उपयोग सीखा। हमने अपने संग्रहालय में रखे शिलाखण्डों की पहचान की।

सोमवार, 2 नवम्बर

नया माह हम सब के लिए भी नई शुरुआत लाता है। हमने महीने का स्वागत बढ़िया साफ-सफाई से किया। बच्चों ने अपनी मेज़ों को झाड़-पोंछकर चमकाया, इकट्ठे हुए रद्दी कागज़ों की छँटनी की और अपनी किताबों, कॉपियों और उपकरणों को तरतीब से रखा। इससे हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली। "तो हम अलमारियाँ भी क्यों नहीं साफ कर देते?" आधा दर्जन बच्चों ने एक साथ पूछा। पता नहीं क्यों, उन्हें अलमारियाँ साफ करने में मज़ा आता है। पर इसके बाद भी सफाई से उनका मन नहीं भरा। रूथ को लगा कि हमें लगे हाथ रसोई के आलों को भी साफ कर डालना चाहिए ताकि जब गर्म भोजन का कार्यक्रम शुरू हो तो सब व्यवस्थित हो। फ्रैंक ने ऐन खाँटी परिपाटी के अनुसार रगड़-रगड़कर टाँडें धोईं, वॉरेन ने उन्हें पूरी तरह सुखाया तथा एना और रूथ ने कपों पर बच्चों के नाम लिखकर नए लेबल चिपकाए। तब उन्होंने सारी थालियाँ, भगोने-पतीले, चावल-आटा आदि रखने के डिब्बे उबालकर धोए और उन्हें पोंछकर आलों में सजा दिया। जब हम यह सब कर चुके तो वॉरेन और फ्रैंक ने ज़ोर देकर कहा कि इन सर्दियों के दौरान वे ही रसोइए रहेंगे।

आज हमने जो कुछ किया वॉरेन उसे "कठिन खेल" कहता है। सफाई में पूरा दिन निकल गया, पर अब हमारा कमरा सफाई से महक और दमक रहा है।

साफ कक्षा और आकर्षक खेल मैदान पर ज़ोर देने के कारण बच्चे भी अब कुछ ज़्यादा साफ दिखने लगे हैं।

बुधवार, 4 नवम्बर

बच्चों की शब्दावली हौले-हौले बढ़ रही है। हम नए शब्दों का मज़ा उठा रहे हैं, हर अवसर पर उनका प्रयोग करते हैं। उनका ताज़ा सीखा शब्द है "बेतुका"। हम पढ़ने, लिखने और गणित में फिलहाल ज़्यादा समय लगा रहे हैं क्योंकि सबसे अधिक मदद बच्चों को इन्हीं में चाहिए। इन विषयों में दक्षता केवल इसलिए आवश्यक नहीं है कि वे जीवन के लिए उपयोगी हैं बल्कि इसलिए भी कि इनमें लगातार असफलता पाने से बच्चों में भावनात्मक समस्याएँ उपजती हैं। वॉरेन इसका उम्दा उदाहरण है। जब से गणित और वर्तनी में सुधार से उसे कुछ सन्तोष मिला है, वह समूह में अधिक सहज महसूस करने लगा है।

पठन के लिए मैं शिक्षक मार्गदर्शिका का अनुसरण करती हूँ, क्योंकि पठन विशेषज्ञ मुझसे बेहतर यह समझते होंगे कि बच्चे दरअसल पढ़ना कैसे सीखते हैं और कौन सी कहानी से किस उद्देश्य की प्राप्ति में मदद मिलती है। पर मैं फिर भी अपने हिसाब से कई तब्दीलियाँ करती हूँ क्योंकि अपनी कक्षा की स्थिति को और इन लड़कियों और लड़कों को मैं किसी भी पठन विशेषज्ञ से बेहतर जानती हूँ।

हमारी शाला में गणित, वर्तनी, भाषा और लेखन व्यक्तिगत मसले हैं। प्रत्येक बच्चे की अपनी कॉपी है जिसमें उसकी ज़रूरतें दर्ज हैं। मैं कोशिश कर रही हूँ कि प्रत्येक को उसकी निजी आवश्यकताओं का एहसास हो और उनमें सुधार की इच्छा मज़बूत होती जाए। बच्चों के साथ व्यक्तिगत बैठकें इस मामले में कारगर सिद्ध होती हैं।

कुछ समय पहले तक दोपहर का अभ्यास पीरियड तीन घेरों वाले सर्कस-सा लगता था। बच्चे खुद ईमानदारी के साथ कोशिश करने से पहले ही मेरे पास भागे आते थे। मैं बारी-बारी छोटे समूहों में बच्चों के साथ बैठी और उनका परिचय गणित की पाठ्यपुस्तकों से करवाया। उन्हें समझाया कि हर नए काम के पहले पाठ में गणित की क्रिया के प्रत्येक चरण को सिलसिलेवार समझाया गया है। इन स्पष्टीकरणों का उपयोग कैसे किया जा सकता है, यह मैंने उन्हें क्रमशः दिखाया। अब उनका ध्यान सही जवाब पाने से हटकर समस्या को समझने पर केन्द्रित होने लगा है। रूथ आज बोली, "जवाब तो सही आ गया, पर मुझे समझ नहीं आया कि वह सही क्यों है।"

अब क्योंकि बच्चे स्वतंत्र रूप से काम करने लगे हैं, मैं हर दिन बच्चों के साथ व्यक्तिगत बैठकों के लिए समय निकाल पाती हूँ। आज मैंने रूथ की कॉपियाँ सावधानी से देखीं। ज़्यादातर काम लापरवाही के साथ किया हुआ था। अगले एक माह तक रूथ अपने लिखे हुए को फिर से पढ़ेगी और अगर गलतियाँ नज़र आएँ तो उन्हें सुधारेगी। इससे पहले वह काम खत्म हो गया है, ऐसा नहीं मान लेगी। हमने लोगों के प्रति उसके दृष्टिकोण पर भी बात की, खासकर समुदाय के उन वयस्कों के प्रति जिन्हें वह जानती है। मैंने समझाया कि हम जानते हैं कि वह किसी का अपमान नहीं करना चाहती, पर यह आदत अच्छी नहीं है।

शुक्रवार, 6 नवम्बर

आज स्कूल के बाद हमारी वानिकी क्लब की बैठक हुई। हाज़िरी के समय हमें अपना नाम पुकारे जाने पर उपस्थिति दर्ज करवाने के लिए एक जानवर का नाम बोलना था। रूथ ने हाई स्कूल की एक लड़की का नाम बोला। इससे एक लम्बी चर्चा छिड़ गई कि इन्सान पशु होता है या नहीं। हमने कुंजी की मदद से कुछ और शिलाखण्डों को जाँचा। इस सप्ताहान्त वॉरेन, रैल्फ और एडवर्ड आसपास घूमेंगे और शिलाखण्डों के टूटकर मिट्टी में बदलने के जितने प्रमाण मिल सकें उन्हें तलाशेंगे। अगले सप्ताह वे हमें उन स्थानों पर ले जाएँगे। मैंने बच्चों को 4-एच क्लब का एक नया गीत भी सिखाया।

सोमवार, 9 नवम्बर

आज दोपहर हमने अपने दरवाज़े पर एक तख्ती लटका दी: "पिकनिक पर गए हैं। एक बजे लौटेंगे।" इतना खुशनुमा दिन था कि हम उसे यों ही ज़ाया नहीं करना चाहते थे। हम पहाड़ की ओर बढ़े और एक बल खाती धारा के किनारे बैठ हमने अपना खाना खाया। लौटते समय मैं बच्चों को बतियाते सुनती रही और मुझे बड़ी शिद्दत से उनकी ज़रूरतों का एहसास होने लगा और उतनी ही शिद्दत से अपनी कमियों की चेतना भी जगी। मैं उनसे ठीक उसी तरह बात करना चाहती थी जैसे हमारे राज्य के वन अधिकारी श्री स्कोवल करते हैं ताकि प्रकृति की दुनिया के चमत्कार उनके सामने खोलकर रख सकूँ। पर मैं कितना कम जानती हूँ। सप्ताह के दौरान जब तक मैं बच्चों की कॉपियाँ सावधानी से देखती हूँ, अपने छह पठन समूहों की तैयारी करती हूँ, सामाजिक अध्ययन की सामग्री पढ़ती हूँ और अपने काम से जुड़ी बारीकियों से जूझती हूँ, तब तक सोने का समय हो जाता है। इतना थक गई होती हूँ कि जिन बातों की विस्तृत योजना बनानी होती है उनके बारे में सोच भी नहीं पाती। इस तरह जैसे कर रही हूँ वैसे ही करती जाती हूँ। इच्छा होती है कि काश मैं एक की जगह चार होती ताकि हरेक बच्चे के दिल-दिमाग में जो कुछ हो रहा है उसे समझ पाती और उस बारे में कुछ कर पाती।

गुरुवार, 12 नवम्बर

यह शिक्षा सप्ताह है। हमने अपनी समय सारिणी उलट दी है ताकि माताएँ बच्चों

को सामाजिक अध्ययन पर काम करते देख सकें। सिर्फ श्रीमती थॉमसन, श्रीमती विलियम्स और श्रीमती डूलियो आईं। चार माताओं ने लिखित माफी माँग ली। न आने के सबके जायज़ कारण थे। श्रीमती डूलियो के आने की मुझे बेहद खुशी हुई। वे पहली बार स्कूल आई थीं। तीन बजे बड़ी लड़कियों ने माताओं को चाय परोसी और हमने गपशप की। श्रीमती विलियम्स दक्षिण कैरोलीना में अपने रिश्तेदारों के पास समय बिताकर लौटी हैं। उन्होंने अपनी यात्रा के बारे में बताया।

शुक्रवार, 13 नवम्बर

हमने अखबार की सम्भावनाओं पर बात शुरू की, उसकी व्यवस्था कैसे की जाती है और हम उसमें क्या-क्या डाल सकते हैं। वॉरेन को मुख्य सम्पादक और ओल्गा को सह-सम्पादक चुना गया।

सोमवार, 16 नवम्बर

आज खासी ठण्ड थी, सो दोपहर को एक गर्म व्यंजन परोसना उचित लगा। रूथ और मेरी ने कुशलता से पकाया और सफाई का ध्यान रखा। पर खाना खाने के दौरान काफी शोर मचा और उलझन हुई। खाने के बाद का सत्र आरम्भ करने से पहले कुछ मिनट खाने के पीरियड की बात हुई। अब से जिन्हें बारह बजे काम में जुटना है, वे 11:50 पर हाथ धो लेंगे। वे डेस्कें जोड़कर बड़ी मेज़ बनाएँगे, उस पर मोमजामे की पट्टियाँ लगा रूमाल, चम्मच आदि रखेंगे। इस बीच समूह के बाकी लोग हाथ साफ कर लेंगे। जब तक सब हाथ धो अपने-अपने स्थान पर बैठ नहीं जाते, परोसगारी नहीं होगी। जब सबको भोजन परोस दिया जाएगा, हम प्रार्थना करेंगे। खाना पकाने वालों को यह ध्यान रखना होगा कि तश्तरियों को धोने के लिए गर्म पानी तैयार हो और रसोई फिर से व्यवस्थित की जाए। जब तक थालियाँ उठाकर, धो-पोंछकर वापस नहीं रख दी जातीं, सब बैठे रहेंगे। बरतन धोने वाला साबुन घुला गर्म पानी और धोने के लिए उबलता पानी तैयार रखेगा। जब बच्चे बाहर खेलने चले जाएँगे तो कुछ बच्चे मोमजामे की पट्टियाँ धो-पोंछकर रख देंगे और फर्श की सफाई भी कर देंगे ताकि दोपहर की पढ़ाई के काम में कोई दिक्कत न आए। थालियाँ धोने वाला बच्चा और उन्हें पोंछकर रखने वाला बच्चा रसोईघर में काम करेंगे। सामान्य देखभाल करने

वाला बच्चा यह सुनिश्चित करेगा कि सब काम हुए हैं या नहीं। वह चूल्हे की सफाई भी करेगा और रसोईघर को व्यवस्थित करना भी उसकी ज़िम्मेदारी होगी। हमने अखबार के आलेखों का काम शुरू कर दिया। हमने बोर्ड पर उन चीज़ों की सूची बनाई जिन पर हम लिखना चाहते थे और सब बच्चों ने अपनी पसन्द के विषय चुन लिए। इस काम के लिए फिलहाल कुछ समय तक हम अँग्रेज़ी के पीरियडों का उपयोग करेंगे।

मंगलवार, 17 नवम्बर

आज मध्याह्न भोजन पकाने, परोसने, और उसके बाद सफाई में काफी सुधार रहा। यह सुधार सायास था क्योंकि कई बच्चों ने कहा, "आज हम कल से बेहतर थे, है ना?"

बुधवार, 18 नवम्बर

आज फ्रैंक के कारण मेरा दिल खुश रहा। वह लड़का सच में मुझे अज़ीज़ लगता है। आज उसने तय किया कि वह पाँच नन्हे लड़कों के साथ खाना खाएगा। उसने उन्हें ढंग से चम्मच पकड़ना सिखाया। उसने आलू के शोरबे की आखिरी बूँद तक उन्हें खिलाई। उसने शोर करने वालों को चुप कराया। लड़के फ्रैंक को पसन्द करते हैं। उसका उन पर अच्छा असर पड़ता है, खासकर एल्बर्ट पर।

शुक्रवार, 20 नवम्बर

आज तीनों लड़के वानिकी क्लब के सदस्यों को घुमाने ले गए। उन्होंने हमें हवा, पाले, बढ़ते वृक्षों और पानी से टूटकर मिट्टी बनते शिलाखण्ड दिखाए। लौटने पर हमने नमक के क्रिस्टल बनाए ताकि समझ सकें कि प्रकृति में यह प्रक्रिया कैसे होती है। कई बच्चों को स्फटिक के टुकड़े मिले हैं और वे यह सोचने पर मजबूर हुए हैं कि जो आकृति इन स्फटिकों की बनी वह क्योंकर बनी होगी!

गुरुवार, 26 नवम्बर

आज सुबह का काफी समय अखबार के आलेखों पर लगा। हमने लेख व्यवस्थित किए और बोर्ड पर यह योजना बनाई कि वे अखबार में कहाँ छापे जाएँगे। मैं छपाई के लिए उन्हें टाइप करवाऊँगी।

सोमवार, 30 नवम्बर

रैल्फ अगले दो सप्ताहों के लिए थालियाँ साफ करने वाला रहेगा। वह कुशलता से काम करता है और आज पहली बार दोपहर के सत्र से पहले उनसे सलटकर उसने रसोई भी व्यवस्थित कर दी थी। एण्ड्रयूस् बहनों पर खाना पकाने की ज़िम्मेदारी है और उन्होंने हर छोटी-छोटी बात पर बार-बार पूछताछ की। मुझे सुबह स्कूल शुरू होने से पहले उनके साथ अधिक समय बिताना होगा ताकि वे स्वतंत्र रूप से काम कर सकें।

मंगलवार, 1 दिसम्बर

आज एक नया लड़का आया। उसके साथ उसकी माँ भी आई, जिसने मुझे चेता दिया कि वह शरारती है और मुझे उसे सीधा करना होगा। फ्रेड लुत्ज़ तीसरी कक्षा में है। उसकी सुबह ठीक-ठाक कटी और उसने आसानी से दोस्त बना लिए। जोसेफ ने खराब व्यवहार किया। वह नए लड़के के सामने शान बघारने लगा, क्योंकि फ्रेड चुपचाप सुन रहा था। बाद में मैंने फ्रेड से बात की और कहा कि वह जोसेफ पर ध्यान न दे, क्योंकि वह जो कुछ भी करता-कहता है उसके लिए खुद ज़िम्मेदार नहीं है। पर हम समझदार हैं और वह सब नहीं कर सकते जो जोसेफ करता है।

बुधवार, 2 दिसम्बर

ओल्गा और एना ने आज अखबार की प्रतियाँ छापीं। जब वे छाप चुकीं तो हमें काम बन्द कर उसे पढ़ना पड़ा। बच्चे अपनी मेहनत के नतीजे से बड़े खुश थे। हमने अभिभावकों और दोस्तों के लिए क्रिसमस कार्ड बनाए। बच्चे ये कार्ड मोटे कागज़ पर बना रहे हैं। मैंने बच्चों को दो भागों में "निस्तब्ध रात्रि" गाना सिखाया। उन्होंने गीत को हार्मोनिका पर बजाना भी सीखा।

शुक्रवार, 4 दिसम्बर

इन बच्चों को खुद अपनी गतिविधियों की योजना बनानी चाहिए क्योंकि रुचि और उद्देश्य दोनों ही समग्र विकास के लिए आवश्यक हैं। सहायक क्लब व व्यक्तिगत बैठकों की मदद से वे उद्देश्य सहित योजना बनाने भी लगे हैं। आज हमने इस दिशा में एक और कदम बढ़ाया। हर सुबह मैं बोर्ड पर दिन की योजना

लिखती हूँ। इसके बाद हम उस पर चर्चा कर सबसे पहले क्या करेंगे यह भी तय कर लेते हैं। पर आज मैंने उन्हें खुद अपने दिन की योजना बनाने को कहा। जो किया जाना है उसकी हमने मौखिक रूप से सूची बनाई और तब उसे ब्लैकबोर्ड पर व्यवस्थित किया। बच्चों को लगा कि सुबह कमरा बेहद ठण्डा रहता है, इसलिए वही समय क्रिसमस पर गाए जाने वाले गीतों के अभ्यास के लिए सही है। सामाजिक अध्ययन के पीरियड में हम अपना क्रिसमस का नाटक तैयार कर रहे हैं। हमारा नाटक बाइबल में "ल्यूक" खण्ड के दूसरे अध्याय में दी गई क्रिसमस की कथा पर आधारित है। इस नाटक के बीच जगह-जगह हम उपयुक्त गीत गाएँगे।

सोमवार, 7 दिसम्बर

बच्चों ने अपना दिन सफलतापूर्वक नियोजित किया। अपने समूहों की योजना लेने के बाद बच्चों ने अपनी व्यक्तिगत गतिविधियों की सूची बनाई। एना ने एण्ड्रयूस् के साथ क्रिसमस नाटक की मंच सज्जा पर बात कर यह तय किया कि वे तैयारी कब से करेंगे। पोशाक समिति ने यह तय किया कि वे कब-कब मिलेंगे। रैल्फ और वॉरेन ने समय निकाला ताकि वे लकड़ी के कोठार को साफ कर दें क्योंकि कल नई लकड़ी आने वाली है। बच्चों ने अपने स्तर पर भी सूचियाँ बनाईं, जैसे "पृष्ठ 72 के गणित के सवाल करो . . . शुक्रवार के श्रुतिलेखों की भूलें सुधारो . . . एक क्रिसमस कार्ड बनाओ . . . लाइब्रेरी पुस्तक से एक अध्याय पढ़ना है।" काम पूरा करते ही वे सूची में दर्ज काम के सामने निशान लगाते जाएँगे। कई बच्चों ने इतनी लम्बी-चौड़ी सूची बना ली थी कि काम दिन भर में पूरा हो ही नहीं सकता था, सो नहीं हुआ। शाम को हमने इस बात पर चर्चा की कि हमने नियोजित काम कैसा किया।

मंगलवार, 8 दिसम्बर

आज हमने नाटक का अभ्यास किया। गायक टोली को अब नाटक में अपनी भूमिका समझ आने लगी है। अब इस टोली के बच्चे इस दुख से उबरने लगे हैं कि नाटक में उनकी संवाद बोलने की भूमिका नहीं है। सामान्यतः जिस समय हम पठन का काम करते हैं उस समय हमने अपने उपहार बनाने शुरू किए। बड़े बच्चे काँच पर आकृतियाँ बना रहे हैं, जिसे वे बाद में फ्रेम में मढ़ देंगे। छोटे बच्चे कपड़ों की लीरियों से गमले लटकाने वाले छींके बुन रहे हैं।

शुक्रवार, 11 दिसम्बर

इन बच्चों को ऐसा सामाजिक आचरण व दृष्टिकोण सीखना है कि वे अपने संगी-साथियों से सही बर्ताव करें और आत्मविश्वास और सन्तुलन से नई परिस्थितियों का सामना करें। हमने शारीरिक शिक्षा और पुस्तकालय के पीरियडों में इस पर खूब मेहनत की है। आज हमें यह अभ्यास करने का एक और मौका मिला। कोलम्बिया विश्वविद्यालय के दो शिक्षक हमसे मिलने आए। मैं बच्चों की प्रतिक्रिया देखने के लिए उन पर नज़र गड़ाए थी। वे न तो इससे परेशान थे न उत्तेजित और कई बार तो मुझे लगा कि उन्हें आगन्तुकों का भान तक नहीं था। कुछ ऐसे भी मौके आए जब वे शर्माए। क्लब की बैठक के समय रैल्फ की बोलती बन्द हो गई। मैंने उसकी कुछ मदद की, पहले सदमे के बाद शेष कार्यवाही बिना व्यवधान चली। ओल्गा ने न तो मेहमाननवाज़ी में भाग लिया, न चर्चा में शिरकत की। सहायक क्लब की बैठक में मेरी को कई सुझाव देने थे पर वह कुछ सँकुचा गई। इस पर वॉरेन को उसकी ओर से सुझाव रखने पड़े। बाद में मेरी ने मेहमानों से दोस्ती कर ली और हमारे काम के बारे में बताया। मार्था, हेलेन, रूथ और एण्ड्रयूस् बहनों ने उनसे सहजता व बेतकल्लुफी से बातचीत की। मेहमानों ने हमारे गर्म खाने की योजना में रुचि जताई और काफी समय रसोई में हमारे खानसामों को देखते हुए बिताया। जब मैं वहाँ झाँकने गई तो मे स्पैगेटी और टमाटरों में मनोयोग से मसाले डाल रही थी। उसने सिर उठा मुझे देखा और मुस्काई। मे में कुछ बेहद आकर्षक चीज़ है। उसमें हल्का-सा हास्यबोध भी है जिसे पोषित किया जाना चाहिए। डॉरिस भी स्वावलम्बी बनने लगी है। वह टमाटरों का एक डिब्बा खोल रही थी और डिब्बा खोलने के उपकरण को ठीक से चला नहीं पा रही थी। रूथ ने डिब्बा खोलने में मदद की पेशकश की। डोरिस ने जवाब दिया, "ना! बस मुझे बता दो कि कैसे करना है, फिर मुझे ही खोलने दो।" हमारे मेहमान सीखने-समझने की प्रक्रिया में सन्तुष्टि के महत्व को गहराई से समझते थे। उन्होंने कहा कि इतना बढ़िया स्पैगेटी व टमाटर उन्होंने पहले कभी नहीं खाए और इनमें मसालों की मात्रा बिलकुल सही थी। हमारी लड़कियाँ बेहद खुश हो गईं।

हमारे सहायक क्लब के नए पदाधिकारी चुने गए। वॉरेन अध्यक्ष है, एडवर्ड उपाध्यक्ष और ओल्गा सचिव। एडवर्ड के चुने जाने से मुझे खुशी हुई। वह इतने

कम काम अच्छी तरह से कर पाता है। उपाध्यक्ष का पदभार कठिन नहीं है, पर उसके साथ कुछ सम्मान जुड़ा हुआ है और वह सहायता करते हुए काफी कुछ सीख सकेगा। मुझे खुशी है कि समूह ओल्गा के महत्व को पहचान रहा है। और वॉरेन! तीन माह पहले वह अकेला और अतिसंवेदनशील बच्चा था जिसके कोई दोस्त नहीं थे। उसने न केवल अपने काम में खूब प्रगति की है बल्कि वह समूह का सबसे लोकप्रिय लड़का भी बन गया है।

सोमवार, 14 दिसम्बर

सामेटिस बच्चे शहर से लौट आए हैं, सब इससे बेहद खुश हैं। श्रीमती सामेटिस ने कहा कि शहर बच्चों को बड़ा करने के लिए ठीक जगह नहीं है। वे उन पर नज़र नहीं रख पाती थीं। जब हम दिन की योजना बना रहे थे तो बच्चों ने कहा कि वे सामेटिस बच्चों से उनके शहर के उस स्कूल के बारे में सुनना चाहेंगे जहाँ वे जाते रहे थे। वॉरेन ने न्यू ब्रनस्विक में शुक्रवार को जो कठपुतली नाटक देखा था उसके बारे में भी वे जानना चाहते थे। सोफिया ने अपनी बात काफी व्यवस्थित तरीके से रखी, पर वॉरेन ने समूचे समूह को पूरी तरह बाँध लिया। जब उसने बात खत्म की तो मेरी बोल पड़ी, "वाह! किस्सा सुनाना तो इसे आता है।"

मैंने आज जाना कि श्रीमति सामेटिस के चार भाई हैं। एक यूनान में डॉक्टर है, एक कायरो विश्वविद्यालय में प्रोफेसर है, तीसरा यरूशलम में पादरी है, और चौथा न्यू यॉर्क में सेल्समैन। श्रीमती सामेटिस अपने परिवार की अकेली ऐसी सन्तान थीं जिन्हें लड़की होने के कारण पढ़ाया-लिखाया नहीं गया। पर उन्होंने खुद को न केवल अपनी मातृभाषा यूनानी पढ़ना सिखा लिया, बल्कि अँग्रेज़ी पढ़ना भी। मुझे सामेटिस बच्चों की दक्षता अब समझ आने लगी है।

बुधवार, 23 दिसम्बर

पिछले कुछ दिन बेहद व्यस्त रहे हैं। हमने उपहार बनाकर पैक कर दिए हैं और कार्ड भी बन चुके हैं। हमारे क्रिसमस ट्री और मंच की जो कुछ सजावट करनी थी वह पूरी कर दी गई है। पर्दे टाँग दिए गए हैं और पोशाकें जाँच ली गई हैं। हमने नाटक का अभ्यास किया और गीत गाए। हरेक बच्चा मदद कर रहा था और खुश था। आखिरकार वह दिन आ गया है।

आज रात हमारा छोटा-सा कमरा मेहमानों से अटा पड़ा था। दो को छोड़ सभी माता-पिता आए। श्री हिल भी कोशिश कर समय से पहुँच गए। श्रीमती एण्ड्रयूस् भी आईं! वे इतने सालों से पास ही रहती हैं पर अब तक कभी स्कूल नहीं आई थीं। एण्ड्रयूस् बहनों को इससे बड़ी खुशी हुई।

ब्लेयर अकादमी के प्राचार्य डॉ. ब्रीड और उनकी पत्नी भी आईं। उन्हें नाटक अच्छा लगा और गायन भी पसन्द आया। डॉ. व श्रीमती ब्रीड हमारी मदद करना चाहते थे, सो उन्होंने पियानो के लिए कुछ पैसे दिए। पियानो की हमें सख्त ज़रूरत है।

मेरे पिता सैंटा क्लॉज़ बने और उन्होंने बच्चों को सन्तरे, मिठाइयाँ और खिलौने और अभिभावकों को उपहार बाँटे। बेहद खुशनुमा शाम गुज़री। दर्शकों को देख महसूस हुआ कि दोस्ताना वातावरण चारों ओर छाया है। हम अच्छे दोस्त बन चुके हैं, ये लोग और मैं।

गुरुवार, 24 दिसम्बर

सफाई में पूरी सुबह निकल गई। एक बजे बच्चे छुट्टियों के लिए घर लौट गए और स्कूल भवन सुनसान हो गया।

गुज़रे महीनों में कितना कुछ हुआ है। मैंने इन बच्चों के व्यक्तित्व को क्रमशः उभरते और कुछ आज़ाद होते देखा है। योजना बनाने, उन्हें सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने, समस्याओं को पहचानने और उन्हें सुलझाने की क्षमता उनमें पनपती देखी है। एक-दूसरे के साथ रहने व एक-दूसरे का सम्मान करने की काबिलियत उनमें आई है। मैंने कई तरह की गतिविधियों को प्रोत्साहित किया है ताकि हरेक बच्चे को कम से कम एक तरह की गतिविधि चुनौतीपूर्ण लगे और वह उसके ज़रिए हमारे समूह में अपना स्थान बना सके।

3

हमने वृद्धि की पीड़ाएँ झेलीं

सोमवार, 4 जनवरी 1937

आगामी कुछ माह मैं हरेक बच्चे का सहकार पाने की कोशिश करूँगी ताकि उसके काम के उद्देश्य तय हो सकें। छुट्टियों से पहले कई दिनों तक मैंने बच्चों की उपलब्धि परीक्षा लेने में आधा-आधा दिन लगाया था। इस पिछले सप्ताह मैंने उनकी परीक्षा पुस्तिकाओं को जाँचा और नतीजों के व्यक्तिगत ग्राफ बनाए। ये ग्राफ बच्चों की पहली परीक्षा के नतीजों के ग्राफ के ऊपर चिपके हैं ताकि हरेक बच्चा अपने व्यक्तिगत सुधार और तरक्की को देख सके। मैंने इनमें प्राप्तांक नहीं दर्शाए हैं। ग्राफ केवल यह बताते हैं कि विभिन्न विषयों में बच्चा ऊपर गया है या नीचे। बच्चों ने काफी प्रगति की है। रैल्फ ने तो हर विषय में महत्वपूर्ण तरक्की की है।

आज सुबह जब बच्चे स्वतंत्र रूप से काम कर रहे थे, मैंने एक-एक कर उनके साथ व्यक्तिगत सत्र किए ताकि मैं उनसे उनकी प्रगति और सुधार के उपायों पर बातचीत कर सकूँ। बच्चों को रंगीन ग्राफ पसन्द आए, खासकर इसलिए क्योंकि उनमें से ज़्यादातर ग्राफ सुधार इंगित कर रहे थे। निरन्तर प्रयत्न के लिए सुधार बड़ा भारी प्रोत्साहन सिद्ध होता है। इन सत्रों के बाद बच्चों ने अपनी प्रगति पुस्तकें बनाईं जिनमें वे ये ग्राफ और सुधार सम्बन्धी कामों के बारे में मेरे सुझाव दर्ज करेंगे। इन पुस्तकों में वे एक पन्ना ऐसा भी रखेंगे जिसका शीर्षक होगा "चीज़ें जिनको मैंने खुद किया"। इस माह वे इसमें कुछ छोटी-मोटी बातें भी दर्ज करेंगे जैसे खेलने के बाद बिना किसी के कहे खुद खिलौने को यथास्थान रखना। जैसे-जैसे उनकी प्रबन्धन क्षमता बढ़ेगी वे केवल उन बातों को दर्ज

करेंगे जिनमें वास्तव में प्रबन्ध शामिल हो, जैसे किसी समिति की अध्यक्षता।

क्रिसमस से पहले कस्बे में रहने वाली हमारे समुदाय की मित्र श्रीमती विल्सन ने कहा कि वे हमारे लिए मात्र दस डॉलर में पियानो की व्यवस्था कर सकती हैं। हम यह देख प्रसन्न थे कि उन्होंने एक अच्छा-सा पियानो भिजवा दिया था, जिसे दुरुस्त भी करवा दिया गया था। ज़ाहिर था कि हमें एक छोटा-सा संगीत सत्र भी करना पड़ा।

मंगलवार, 5 जनवरी

आज अद्‌भुत और रहस्यमय चीज़ें होती रहीं। खाना बनाने वालों ने सफाई का खास ध्यान रखा। रैल्फ ने दो बार उठकर दरवाज़ा बन्द किया, जिसे कोई लापरवाहीवश खुला छोड़ गया था। उसने पहले ऐसा कभी नहीं किया था, चाहे वह ठिठुरने क्यों न लगा हो। एडवर्ड ने अपने आप गुणा के कुछ संयोजन करने सीखे। कैथरीन ने पियानो को पॉलिश से चमकाया। क्यों भला? बात अचानक तब साफ हुई जब मैंने कैथरीन को अपनी प्रगति पुस्तक खोल उसमें यह दर्ज करते देखा, "जनवरी 5, जब कोको की ट्रे भर गई तो मैंने उसे परोसने में डॉरिस की मदद की।" वे सब जुटे हुए हैं कि अपनी सूची में कुछ जोड़ सकें। यही इन बच्चों का अगला कदम है।

शुक्रवार, 8 जनवरी

वॉरेन ने सहायक क्लब की बैठक की अच्छी अध्यक्षता की। वह आत्मविश्वास से भरा था और उसने चर्चा प्रोत्साहित की। एल्बर्ट बोला, "अध्यक्ष महोदय, हमें शारीरिक शिक्षा के पीरियड के बारे में कुछ करना चाहिए। इतना शोर मचता है कि हमारा सिर दुखने लगता है।" ठण्ड के कारण हमें अक्सर अन्दर ही खेलना पड़ता है। सुबह तो हम उस पीरियड में नाच लेते हैं, पर दोपहर बाद हर बच्चा कोई न कोई खेल खेलने लगता है, और तब मचता है शोर। सुझाव दिया गया कि खेल समिति कुछ समूह बनाए और उनके लिए खेल तय कर दे। हर समूह हर दिन खेल बदल सकेगा और समूह का स्वरूप सप्ताह भर बाद बदलेगा। मुझे नहीं पता कि इससे मदद मिलेगी या नहीं। कमरा बेहद छोटा पड़ता है, और हमारी संख्या इतनी है कि जब खेल में मज़ा आने लगता है तो अनचाहे ही शोरगुल मच जाता है।

सोमवार, 11 जनवरी

बच्चों को खेल समिति द्वारा बनाए समूह बिलकुल भी पसन्द नहीं आए। उनका कहना था कि टोलियों में बँटना उन्हें अच्छा नहीं लग रहा क्योंकि इससे कुछ लोग बड़े दुखी हो जाते हैं। अतः सुझाव यह आया कि हम रोज़ अपने समूह खुद बना लें। हरेक यह सुनिश्चित कर ले कि वह इधर-उधर न भटके और किसी न किसी समूह से वास्तव में जुड़ जाए। हमने सम्भावित खेलों की सूची बनाई। मेरी उनका चार्ट बना सूचना-पट्ट पर लगा देगी। जैसे-जैसे खेल समिति को नए खेल मिलेंगे, बच्चे उन्हें सूची में जोड़ते जाएँगे।

मंगलवार, 12 जनवरी

ग्राफ तथा काम सुधारने सम्बन्धी उपचारात्मक सुझावों से बच्चे अपनी मदद खुद कर पा रहे हैं। एडवर्ड कक्षाकार्य को बेहतर करने में जुटा है और प्रतिदिन यह बताता जाता है कि उसने कितना कर लिया है। वह संगीत के सभी पीरियडों में गाता है, और उनके अलावा भी। वह रोज़ कोयला लाता है और जो कुछ उसके हाथों गिरता है उसे उठाता भी है। रैल्फ भी सुधरने के सचेत प्रयास कर रहा है। वह चर्चाओं को ध्यान से सुनता है और उनमें सक्रिय हिस्सेदारी करता है। शब्दकोष लगातार काम में लिए जाते हैं। इन सर्दियों में अपना काफी समय हम अपने सीखने के तरीकों और उपकरणों को बेहतर बनाने के प्रयास में लगाएँगे।

बुधवार, 13 जनवरी

जब से मैंने पिनोकिओ की कहानी पढ़कर सुनाना समाप्त किया है हम लगातार उसे एक नाटक के रूप में प्रस्तुत करने की सम्भावनाओं पर विचार कर रहे हैं। हमने पन्द्रह दृश्यों की सूची बनाई है जिन्हें नाट्य रूप दिया जा सकता है। ज़ाहिर था कि हम इतना सब नहीं कर पाएँगे, अतः हम इनमें से छह ही चुनेंगे। मैंने बड़े बच्चों को छह समूहों में बाँट दिया है ताकि वे पटकथा लिख सकें। छोटे बच्चे अभी भी अपना घर बना रहे हैं और उसके बारे में कहानियाँ लिख रहे हैं। उनकी शब्द सूची इतनी लम्बी हो चुकी है कि आज हमें यह सुनिश्चित करने के लिए उसकी समीक्षा करनी पड़ी कि बच्चों को वे शब्द याद भी हैं या नहीं।

शुक्रवार, 15 जनवरी

आज वानिकी क्लब की बैठक के बाद जब हम घर लौटने की तैयारी कर रहे थे, तो मैंने पाया कि जिस क्यारी में हमने फूलदार कन्द बोए थे उसका बाड़ा नीचे गिरा पड़ा है और क्यारी में हर ओर पैरों के छाप हैं। कैथरीन और सोफिया ने बताया कि बड़े लड़के बाड़े का उपयोग ऊँची कुदान के लिए कर रहे थे। यह सुन मेरा तो दिन ही मटियामेट हो गया। दिन भर जो अच्छा हुआ था दिमाग से गायब हो गया। इन लड़कों ने ठीक इसी क्यारी को बनाने में कितना समय लगाया था, फिर वे ऐसा भला कैसे कर सकते हैं? वह काम उन पर लादा नहीं गया था और उन्होंने उसे स्वेच्छा से, मज़े से किया था।

सोमवार, 18 जनवरी

आज सुबह रैल्फ से मैंने अनुरोध किया कि वह कुछ देर मेरे पास बैठे। मैंने उसे बताया कि शुक्रवार को मैंने क्या देखा था। पर इससे आगे सवाल करती उससे पहले ही रैल्फ बोल पड़ा, "मुझे पता है वह किसने किया था। जॉर्ज, एण्ड्रयू, हेलेन, एल्बर्ट और फ्रेड।" "और तुम, तुम नहीं थे उनके साथ?" मैंने सवाल किया। उसने बताया कि न उसने न फ्रैंक ने इसमें हिस्सा लिया था। "रैल्फ, तुमने मुझे यह सब पहले क्यों नहीं बताया?" उसके उत्तर से मुझे लगा कि अच्छा हुआ जो यह घटना घटी। "फ्रैंक और मैंने उन्हें क्यारी में कूदते देखा था, और हमें लगा था कि उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, सो हमने उन्हें कूदना बन्द करने को कहा। वे बात मान गए, सो मुझे लगा कि आपको बताने की कोई ज़रूरत नहीं है।" उन्होंने ठीक वही किया था जो उन्हें सिखाने की कोशिश मैं कर रही थी, कि वे अपनी समस्याएँ खुद सुलझाएँ। मैंने पाँचों बच्चों से कहा कि वे बाड़े की मरम्मत कर दें।

आज जब मेरी सहायक शिक्षिका आई तो मैंने उसे पूरा किस्सा सुनाया। उसका कहना था कि बच्चों को अब तक क्यारी में लगाए अपने श्रम से कोई सन्तुष्टि नहीं मिली थी। कोई परिपक्व व्यक्ति ही तात्कालिक आनन्द को दूर भविष्य के आनन्द के लिए मुल्तवी कर सकता है। यह बच्चों ने अभी सीखा नहीं है। साल भर बाद ही वे क्यारी के फूलों की सुन्दरता का आनन्द पाएँगे तथा आगन्तुक उनके मैदान की प्रशंसा करेंगे। तब शायद वे ऐसी विवेकहीन हरकतें नहीं करेंगे।

मंगलवार, 19 जनवरी

आज दोपहर वॉरेन, जॉर्ज और फ्रैंक ने चारों ओर पानी बिखेर दिया। बीच-बीच में मध्याह्न भोजन से सम्बन्धित अपने काम कोई भी नहीं करना चाहता; आज ठीक ऐसा ही दिन था। एल्बर्ट को चटाइयाँ उठाने को कहना पड़ा। मेरी ने उन्हें इतनी खराब तरह से साफ किया कि उसे फिर से सफाई करनी पड़ी। कैथरीन लगातार वॉरेन और फ्रैंक की शिकायत करती रही। अलमारियाँ अव्यवस्थित छोड़ दी गईं, तौलिए धोए नहीं गए, और चूल्हे पर से खाने के अवशेष साफ नहीं हुए। मैंने इस सब पर आज कोई बात नहीं की। मुझे लगता है कि कभी-कभार ज़्यादा टोकाटाकी ठीक नहीं रहती।

बुधवार, 20 जनवरी

आज मैंने रसोई में बच्चों की मदद की, उन्हें काम करने के अधिक आसान तरीके बताए। तौलिए धोने में दिक्कत इसलिए आती है क्योंकि गर्म पानी पूरा नहीं होता। आज जब तश्तरियाँ धोने का पानी तैयार हो गया तो हमने एक पुरानी बाल्टी में पानी गर्म किया ताकि तश्तरियाँ धोने वाले टब भी साफ किए जा सकें। इससे थोड़ी मदद मिली पर तब भी फ्रैंक ने कहा, "मुझसे यह काम नहीं होता। और मुझे यह अच्छा भी नहीं लगता है।"

कार्टराइट बच्चे पिछले कुछ दिनों से नहीं आए थे और आज पता चला कि उन्हें इनफ्लुएन्ज़ा हुआ है। असल में आज उनतीस में से सिर्फ सत्रह बच्चे ही उपस्थित थे। इस कारण भी गर्म खाने को लेकर परेशानियाँ पैदा हो रही हैं। बच्चे दो सप्ताह के लिए अपने-अपने काम करते हैं। दो सप्ताह शुरू होने के प्रारम्भ में मैं काम का सावधानी से निरीक्षण करती हूँ, ताकि बच्चे उन्हें ढंग से करने लगें। पर इतने बच्चे अनुपस्थित हो जाते हैं तो बच्चों को अपने काम के अलावा दूसरे काम भी करने पड़ते हैं और मैं चाहकर भी सबकी मदद नहीं कर पाती। इस कारण बच्चों को काम कठिन और अरुचिकर लगने लगता है। फिर हमारी कोई प्रभावी कार्य योजना भी नहीं है। सच यह है कि मुझे भी उतना ही सीखना है जितना बच्चों को।

शुक्रवार, 22 जनवरी

जब हम अपनी दैनिक योजना बनाने लगे तो कई बच्चों ने कहा कि आज संगीत

सुबह सबसे पहले रखना चाहिए, क्योंकि पिछले कई दिनों से दूसरे कामों के दबाव में संगीत छूटता रहा है। मैंने समूह को छपी लिपि देखकर पढ़ने के बारे में कुछ मूल बातें सिखाईं। इसमें सबको मज़ा आया, शायद इसलिए कि यह कुछ नया था। यहाँ तक कि लड़कों ने भी गाया।

सोमवार, 25 जनवरी

हमें फ्रेड के साथ कुछ परेशानी होती रही है। वह किसी न किसी से लड़ता रहता है। फ्रेड अपनी उम्र से अधिक परिपक्व है। उसके घर जाने पर मैंने जाना कि वह सुबह स्कूल आने से पहले छह गायों को दुहता है। वह काम के बाद कपड़े नहीं बदलता, सो उससे गौशाला की गन्ध आती है। ये लोग कड़ी मेहनत में डूबे रहते हैं। उन्हें उस दुनिया को देखने की फुर्सत तक नहीं मिलती जिसमें वे जीते हैं। परिवार का प्रबन्धन अच्छा नहीं है। श्रीमती लुत्ज़ ने बताया था कि उन्हें यह खेत पसन्द नहीं है और वे शायद ज़्यादा नहीं रहेंगी। मैंने बाद में सुना कि श्रीमती लुत्ज़ लगातार स्थान बदलती रहती हैं। जब खेत बिक्रियाँ होती हैं तो अपने बिखरे बालों, पुरुषों के जूतों और उजड्ड भाषा के कारण वे अजीब-सा दृश्य पेश करती हैं। बच्चे फ्रेड की पृष्ठभूमि को मुझसे बेहतर जानते थे और यही कारण है कि उसे समूह द्वारा स्वीकार किए जाने में दिक्कतें आ रही हैं।

मंगलवार, 26 जनवरी

दिन समाप्त होने को था जब मैंने सप्ताहान्त पर बनाई कठपुतली "मसखरे विलफ्रेड" को पेश किया। कठपुतली कैसे चलाई जाती है, यह दिखाने और हरेक को कुछ अभ्यास का मौका देने के बाद मैंने पूछा कि कौन स्वेच्छा से दो मिनट उसका खेल दिखाएगा। कुछ बहादुर बच्चों – हेलेन, मेरी, वॉरेन, रूथ और एण्ड्रयू ने कोशिश की। हम सब खूब हँसे। हमें यह नन्हा जोकर बड़ा प्यारा लगता है! सभी बच्चे अब कठपुतलियाँ बनाना चाहते हैं। उन्होंने डोरियों वाली कठपुतलियों की किताब बड़े ध्यान से देखी जो मैंने पुस्तकालय वाली मेज़ पर रख दी थी।

बुधवार, 27 जनवरी

गर्म खाने की व्यवस्था में मैं काफी वक्त लगाने लगी हूँ और यह मुझे थका देता है। मुझे लगता है मानो मैं तीन घेरों वाला सर्कस संचालित कर रही हूँ। मिसमॉरन ने पहले ही कहा था कि इस साल गर्म खाना देने में काफी दिक्कत

आएगी क्योंकि पिछले दो सालों से जो लड़कियाँ कुशलता से यह कार्यक्रम चला रही थीं वे हाई स्कूल चली गई हैं। लगता है अब कुशल कार्यकर्त्ताओं का समूह गढ़ना मेरा काम है।

इस महीने हमने सीखा कि कैसे हमें कई चीज़ें नहीं करनी हैं। आज एना हमारी उन पड़ोसन के यहाँ जाना चाहती थी जिनकी मशीन हम सिलाई के लिए काम में ले रहे हैं। वह अपनी सिलाई पिछली रात क्लब के समय पूरी नहीं कर पाई थी। मैंने उसे याद दिलाया कि उसे भोजन में रूथ की मदद करनी है, तो वह बोली, "अब खास करने को बचा ही नहीं है। जो करना है रूथ कर लेगी।" तब भी वे दोनों खड़ी रहीं जबकि चावल जलकर पेंदे से चिपक गए और कैथरीन को आधे घण्टे तक रगड़-रगड़कर भगोना माँजना पड़ा। बच्चों ने दोनों लड़कियों को साफ-साफ सुना दिया कि वे उनकी पाककला के बारे में क्या सोचते हैं।

गुरुवार, 28 जनवरी

हार्मोनिका का अभ्यास तेज़ी से बढ़ रहा है। आज हमने "यैंकी डूडल" बजाना सीखा। मैं बच्चों को यह भी सिखा रही हूँ कि संगीत निर्देशन कैसे दिया जाता है। कई बच्चों ने वाद्य वृन्द निर्देशन किया और अच्छा ही किया।

शुक्रवार, 29 जनवरी

बिचले समूह ने अपनी इतिहास की पुस्तक *दोज़ हू डेयर्ड* (जिन्होंने साहस किया) पूरी की। बच्चों को यह किताब इतनी अच्छी लगी कि उन्होंने अन्तिम कुछ अध्याय पढ़कर सुनाने को कहा था। जब मैंने आखिरी वाक्य पढ़ किताब बन्द की तो मेरी भावुक हो बोली, "यह बेहद खूबसूरत किताब थी।"

बच्चों की प्रगति पुस्तिका के "चीज़ें जिनको मैंने खुद किया" वाले पृष्ठों में मेरी खास रुचि रही। बच्चों ने जो चीज़ें लिखी हैं उनमें से कुछ ये हैं:

मेरी की गणित में मदद की।

पर्दा खींचा ताकि कैथरीन की आँखों पर धूप न आए।

रसोई साफ की।

मैंने पर्ल से कहा कि वह बुदबुदाकर न पढ़े।

पुस्तकालय से रद्दी कागज़ हटाए।
पकाने में खूब मेहनत की।
अलाव का निचला दरवाज़ा बन्द किया ताकि कमरा बहुत गर्म न हो जाए।
बरतन धोने के लिए गर्म पानी हो, यह सुनिश्चित किया।
जब हम टेन-पिन्स खेल रहे थे उस वक्त फ्रेड को लड़ने से रोका।
जब खेल में कोई भी "वह" नहीं बनना चाह रहा था तो मैं उदारता से "वह" बना।
मैंने क्लब बैठक की कार्यवाही लिखना याद रखा।
खेल के समय खेल शुरू करवाया।
पिनोकिओ नाटक में अपना हिस्सा मेहनत से लिखा।
दरी बुनने में प्राथमिक समूह के बच्चों की मदद की।
हेलेन से कहा कि वह पियानो पर न खेले और उसी समय हेलेन से कहा कि वह अपनी किताब में न लिखे।
शब्दकोष का जो पन्ना निकल गया था उसे वापस रखा।
खुद को व्यस्त रखा।
दरवाज़े से कोट उठाकर टाँगे।

सोमवार, 1 फरवरी

जैसे-जैसे बच्चों ने अपना काम खत्म किया हरेक ने *वीकली रीडर* के अपने संकलन के लिए मोटे कागज़ की जिल्द बनाना शुरू किया। हम भूगोल का कोई खास औपचारिक अध्ययन नहीं कर रहे। मुझे लगा कि हम इस अखबार के माध्यम से बच्चों के लिए सार्थक भूगोल का कुछ अध्ययन कर पाएँगे। मैंने यह भी सुझाया कि अगर हमारे पास दुनिया का बड़ा नक्शा हो तो हम उन स्थानों की पहचान कर सकते हैं जिनके बारे में हम पढ़ रहे हैं। मेरे पास एक फटा-पुराना 4' X 9' आकार का दुनिया का नक्शा था। सोफिया, हेलेन और रूथ ने कहा कि वे उसे मोटे ब्राउन पेपर पर ट्रेस कर देंगी।

आज रैल्फ ने कोई भी काम करने से इन्कार कर दिया। मैंने उसे एडवर्ड से कहते सुना, "यह उसका काम है, उसे इसके पैसे मिलते हैं। मिस हैनसन (किसी दूसरे स्कूल में उसकी शिक्षिका) हमेशा अपना काम खुद करती थीं।" मुझे

काफी समय से पता था कि कुछ बच्चे ऐसा सोचते हैं। मुझे पता नहीं कि इस बारे में मुझे क्या करना चाहिए। मैं यह भी नहीं जानती कि तत्काल कुछ किया जा भी सकता है या नहीं। दृष्टिकोण में बदलाव लाने में समय लगता है और ऐसा धीरे-धीरे ही होता है।

मंगलवार, 2 फरवरी

रैल्फ, फ्रैंक और एडवर्ड ने अपने काम करने से खुल्लम-खुल्ला इन्कार कर दिया। सो स्कूल के बाद मुझे बड़े लड़कों से बात करनी पड़ी। मैंने उन्हें यह समझाने की कोशिश की कि हमारे जैसे स्कूल में सबको काम में हाथ क्यों बँटाना पड़ता है। मैंने उन्हें यह विचार करने को कहा कि शाला को साफ और व्यवस्थित रखने में पूरे समूह को कितना समय लगता है और अगर एक ही व्यक्ति यह सब करे तो कितना समय लगेगा। गन्दगी और अव्यवस्था के लिए मैं खुद ज़िम्मेदार नहीं, पर फिर भी सफाई में हर दिन हाथ बँटाती हूँ। अगर मैं अकेले ही सफाई करूँगी तो हमें अपनी अधिकांश गतिविधियाँ बन्द करनी होंगी क्योंकि सब कुछ करना एक इन्सान के लिए असम्भव हो जाएगा। अगर हम दिन भर अपनी मेज़-कुर्सियों पर बैठे रहें तो सफाई करना भी काफी आसान होगा। "यह स्कूल तो अन्ततः तुम्हारा है, और मेरे जाने के बाद भी कई सालों तक तुम्हारा ही रहेगा। जो चीज़ें तुम्हारी हैं उन पर तुम्हें गर्व होना चाहिए, क्योंकि ये आखिर यह भी तो बताती हैं कि तुम किस तरह के व्यक्ति हो।" इस समय तक उनकी गर्दनें झुक गई थीं, और मुझे खुद पर शर्म आने लगी थी। सच, कभी-कभी लगता है कि मैं कुछ ज़्यादा ही बोलती हूँ।

बुधवार, 3 फरवरी

फ्रैंक के मुँह से फिर से "जी, बिलकुल" सुनना अच्छा लगा। उसने आज अपने तयशुदा कामों से कहीं अधिक काम किए, और दूसरे लड़कों ने भी यही किया। आज स्कूल की आत्मा ही बदली-बदली नज़र आ रही थी। और जब भी किसी लड़के ने मुस्कुराकर मेरी ओर देखा, मुझे लगा मानो हमारी आपसी समझ और भी गहरा गई हो। और जब से गर्म खाना परोसा जाने लगा है, तब से आज पहली बार लगा कि सब कुछ मैं ही संचालित नहीं कर रही।

नव वर्ष के बाद आज माताओं के साथ हमारी दूसरी बैठक हुई। पिछली बैठक

में मैंने उन्हें बच्चों की प्रगति परीक्षाओं के नतीजों के ग्राफ दिखाए थे और उन्हें समझाया था कि हम उनका उपयोग कैसे कर रहे हैं। वे बच्चों के काम में हुए सुधार से प्रसन्न थीं और उसमें रुचि दिखा रही थीं। उन्होंने प्रगति पुस्तिकाओं के शेष पन्ने पलटकर देखे। तब हमारे गर्म भोजन पर चर्चा की। उन्होंने विमर्श किया कि इसके लिए और पैसे कैसे जुटाए जा सकते हैं। श्रीमती विलियम्स ने कहा कि अगर कोई नाटक खेला जाए तो उन्हें उसमें भूमिका करना अच्छा लगेगा। वे जब हाई स्कूल में पढ़ती थीं उसके बाद से उन्होंने किसी नाटक में हिस्सा नहीं लिया था। "कितना मज़ा करते थे हम, याद है ना!" उन्होंने पूछा।

काउंटी पुस्तकालय में लाइब्रेरियन की मदद से हमने एक हलका-फुलका हास्य नाटक लिया। नाटक था *हाउ द स्टोरी ग्रू* (कहानी कैसे बढ़ती गई)। आज रात हम श्रीमती थॉमसन के घर मिले और श्रीमती हिल ने हमें नाटक पढ़कर सुनाया। हम इतना हँसे कि आँखों से आँसू निकल आए। क्योंकि हमारे पास नाटक खेलने वाली माताओं की संख्या पर्याप्त नहीं थी, हमने दो हाई स्कूल छात्राओं को भी आमंत्रित किया।

गुरुवार, 4 फरवरी

आज सिलाई क्लब की बैठक के लिए लड़कों ने भी रुकना चाहा। कुछ लड़कियों ने अपने फ्रॉक काटे, और कुछ ने अपने शमीज़ों पर सिलाई की, लड़कों ने कठपुतलियों की सिलाई की; उनका आग्रह था कि वे उसी मशीन पर सिएँगे जो श्रीमती मून ने हमारे लिए जुगाड़ दी थी। बड़ी गड़बड़ी मची क्योंकि हमें पर्याप्त संख्या में सूइयाँ और पिनें नहीं मिलीं और हमारी संख्या इतनी अधिक थी कि हम एक-दूसरे के काम में बाधा डालते रहे। बच्चों को बेहद मज़ा आया।

आज रात मैं श्रीमती ब्रीड से मिली और वे जानना चाहती थीं कि वे हमारे लिए और क्या कर सकती हैं। अचानक मुझे सूझा . . . एक नौजवान बढ़ई . . . भला पहले क्यों नहीं सूझा! "क्या आपकी अकादमी में कोई ऐसा लड़का है जो हमारे लिए कठपुतली नाटक के लिए लकड़ी का मंच बना दे?" मैंने पूछा। श्रीमती ब्रीड ने वादा किया कि वे पता करेंगी। घर लौटते समय मैं सोच रही थी, "हाँ, किसी एकल-शिक्षक शाला की अध्यापिका को ठीक यही तो करना चाहिए – जो वह स्वयं नहीं जानती उसे सिखाने-पढ़ाने के लिए दूसरों को आमंत्रित करना चाहिए।"

कल शाम मैंने अपनी सहायक शिक्षिका मिस एवरेट के साथ बिताई – यह विचार करने के लिए कि इन बच्चों के लिए अगला चरण, खासकर सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम में, क्या होना चाहिए। अब तक यह अध्ययन औपचारिक रहा है और हम अपनी पाठ्यपुस्तकों के हिसाब से चलते रहे हैं। उपलब्ध सामग्री का श्रेष्ठतम उपयोग हो सके, इसकी चेष्टा भी करती रही हूँ। पर बच्चों के समक्ष कोई वास्तविक उद्देश्य नहीं रहा है। बच्चों ने न तो सवाल ही पूछे, न ही योजना बनाने में भागीदारी की। हमने स्वयं से पूछा, "हम इन बच्चों को सवाल पूछना कैसे सिखाएँ? उनकी जिज्ञासा को जगाने में मदद कैसे करें? उनके अधिगम को एक-दूसरे से कटे तथ्यों के निष्क्रिय संकलन के बदले सक्रिय कैसे बनाएँ?"

मिस एवरेट का मानना था कि भ्रमण नए अनुभव पाने की आवश्यकता की पूर्ति करेगा। विभिन्न प्रकार के भ्रमण पर बात करने के बाद हमने तय किया कि बच्चों को डॉयल्सटाउन स्थित संग्रहालय ले जाया जाए। इससे हम बच्चों के मन में पायोनियरों (जो सर्वप्रथम बीहड़ इलाकों में जाकर बसे थे) के जीवन के प्रति रुचि को और पैनी बना सकेंगे। बच्चे जिस विषय में रुचि रखते हैं उसके बारे में अधिक पूछते हैं तथा और जानना चाहते हैं। अब क्योंकि हम दोनों ने ही इस संग्रहालय को देखा नहीं था, हमने तय किया कि हम शनिवार को वहाँ जाएँ ताकि पता लगा सकें कि वहाँ बच्चों के देखने लायक क्या-क्या है।

ऐसे भ्रमण से हम कई परिणामों की उम्मीद कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि बच्चे अपना नियत पाठ पढ़ने मात्र की बजाय अधिक जानकारी के लिए दूसरी किताबें देखें। हम चाहते हैं कि बच्चे उस स्थान के बारे में अधिक जानें जहाँ वे रहते हैं। संग्रहालय अधिक दूर नहीं है और वहाँ अध्ययन किया जा सकता है। बच्चे तब ज़्यादा सीखते हैं जब वे चीज़ों को देख सकते हैं और उनके बारे में सोचते हुए उन्हें अपने साथ जोड़ सकते हैं, बजाय इसके कि वे उनके बारे में अमूर्त रूप से सोचें। इस भ्रमण के दौरान हम बच्चों की बात सुनेंगे और वह तलाशने की चेष्टा करेंगे जो उन्हें चुनौती भरा लगे। यह काम मैं बड़े तथा बिचले समूहों के बच्चों को साथ जोड़कर करूँगी। बच्चों से मेरा परिचय अब बढ़ चुका है, सो मैं काम को ऐसी दिशा दे सकूँगी कि प्रत्येक बच्चा अपनी क्षमता के अनुसार प्रगति कर सके। इसके अलावा हमें साथ-साथ काम करने के लिए अधिक समय भी मिलेगा।

शनिवार, 6 फरवरी

मिस एवरेट और मैं डॉयल्सटाउन गए और हमने पाया कि संग्रहालय ठीक वैसा है जैसा हम चाहते थे। डॉयल्सटाउन के आसपास पायोनियर जीवन के जो अवशेष मिले हैं, वे वहाँ संकलित हैं। हमने संग्रहालय के पुस्तकालय में रखी कुछ किताबें देखीं-पढ़ीं। हमने पाया कि हमारे कस्बे के प्रारम्भिक दौर पर काफी रोचक सूचनाएँ उनमें हैं। हमने कुछ नोट्स भी बनाए।

सोमवार, 8 फरवरी

यदा-कदा हम जब दैनिक योजना बनाते हैं तो बच्चे भी सुझाव देते हैं। इससे हमारा दैनिक कार्यक्रम धीरे-धीरे बदलने लगा है। हम स्कूल मैदान की बात कर रहे थे, और बच्चों को लगा कि अगर हमें बसन्त ऋतु में बाहर काम करना है तो हमें अपने खेल मैदान की योजना पर केन्द्रित काम करना होगा। वॉरेन बोला, "आज ही शुरू करते हैं।" फिर उसने जोड़ा, "तो विज्ञान हम सोमवार को क्यों नहीं करते? सब कुछ शुक्रवार को ही होता है।" मेरी ने ध्यान दिलाया, "विज्ञान तो हम वानिकी क्लब में भी करते हैं ना।" सो हमने आज सुबह विज्ञान की कक्षा रद्द करने का निर्णय लिया। कार्यक्रम में निम्नलिखित बदलाव किए गए।

प्रतिदिनः 8:55 से 9:10, दिन का कार्यक्रम बनाना।

सोमवारः 9:10 से 9:25, "ग" समूह (प्राथमिक समूह) का विज्ञान (शेष सप्ताह सामाजिक अध्ययन); 9:25 से 10:00, समूह "क" व "ख" (बड़े बच्चों के समूह) का विज्ञान (सप्ताह के बाकी दिन सामाजिक अध्ययन)।

बुधवारः लड़कियों के लिए नृत्य।

गुरुवारः लड़कों के लिए नृत्य (अगर मौसम सही हो तो बाहर, अन्यथा कक्ष में ही अभ्यास)।

शुक्रवारः 11:20 से 12:00, *वीकली रीडर* तथा *करेन्ट इवेन्ट्स्* (ताज़ा घटनावृत) पर चर्चा; 11:40 से 12:00, पुस्तकालय।

बुधवारः 11:40 से 12:00, स्वास्थ्य।

सोमवार व शुक्रवारः बड़े बच्चों के लिए गायन ("क" तथा "ख" समूह); छोटे बच्चे साथ गाएँ या सिर्फ सुनें।

बुधवारः प्राथमिक समूह ("ग" समूह) के लिए गायन। बड़े बच्चे सहायता करें।

मंगलवार व गुरुवारः हार्मोनिका बजाने का अभ्यास।

दिन के अन्त में जब व्यायाम का पीरियड चले, उस दौरान बच्चों के साथ व्यक्तिगत विचार-विमर्श बैठकें।

पिछले तीन सप्ताह से हम *होम एण्ड गार्डन* (घर व बाग) पत्रिका व बीज कैटेलॉगों का अध्ययन करते रहे हैं और स्कूल मैदान के सौन्दर्यीकरण की अपनी व्यक्तिगत योजनाएँ और विचार दर्ज करते रहे हैं। रैल्फ, वॉरेन, सोफिया, एना, रूथ और मेरी स्कूल मैदान के दो बड़े (6' x 3') नक्शे बना रहे हैं। एक नक्शे में मैदान जैसा आज है यह दर्शाया जाएगा, और दूसरे में हम उसे जैसा बनाना चाहते हैं। आज हमने अपने विभिन्न विचारों पर बातचीत की। हमने खेलने का स्थान, रॉक गार्डन, और शौचालयों के पास की जगह पर निर्णय लिए। यह सारी बातें हमारे बड़े नक्शे पर दर्ज कर ली जाएँगी।

मंगलवार, 9 फरवरी

श्रीमती ब्रीड आज श्री विल्सन को अपने साथ स्कूल लाईं। यह नौजवान कठपुतलियों के बारे में जानता है। श्री विल्सन ने हमारी कपड़े की पुतलियों के नाप लिए। उन्होंने कहा कि वे मुलायम लकड़ी लाएँगे और लड़कों को सिखाएँगे कि उससे पिनोकिओ और उसके दो मित्रों की कठपुतलियाँ कैसे तराशी जाएँ। बच्चे उन्हें घेरकर खड़े हो गए और मुँह बाए सुनते रहे। उनके जाने पर उन्होंने कहा, "कितना अच्छा लड़का है वह।"

शनिवार, 13 फरवरी

डॉयल्सटाउन निकलने में देर हो गई क्योंकि आखिरी वक्त श्री प्रिन्लैक ने कहा कि वे अपने बच्चों को नहीं जाने देंगे। मैं खुद उनके घर समझाने गई क्योंकि प्रिन्लैक बच्चों को ऐसे अनुभव की ज़रूरत सबसे अधिक है। उन्हें डर था कि बच्चों को चोट लग जाएगी। मैंने समझाने की कोशिश की कि वे वहाँ वह सब सीख सकेंगे जो घर बैठे सीखा नहीं जा सकता। पर यह उपाय भी कारगर नहीं रहा। उन्होंने मुझे याद दिलाया कि वे स्वयं यूरोप के सभी देशों में घूमे थे, पर उन्हें इसका कोई फायदा नहीं हुआ। "और वैसे भी स्कूल तो बकवास है। बच्चों को जितना कम स्कूल जाना पड़े, उतना ही बेहतर है। आज शनिवार है। स्कूल

की तो छुट्टी है।" सो हमें प्रिन्लैक बच्चों के बिना ही जाना पड़ा और मैं बेहद दुखी हुई।

संग्रहालय में बच्चों ने अपनी आँखें खुली रखीं और वह सब भी देखा जिस पर हमने पिछले शनिवार गौर तक नहीं किया था। उन्होंने बार-बार "यह क्या है?" का सवाल किया। किस कौतूहल व उत्सुकता से उन्होंने एक-एक चीज़ देखी और कितना अच्छा आचरण किया!

संग्रहालय से लौटते समय हम एक खान पर रुके और वहाँ से अपने स्कूल के संग्रहालय के लिए टैल्क और अभ्रक (बायोटाइट व मस्कोवाइट दोनों), सर्पेन्टाइन, सोपस्टोन, ग्रैफाइट, कैल्साइट व एस्बस्टॉस के नमूने लिए। बच्चों को खान इतनी अच्छी लगी कि उन्हें वहाँ से निकालना ही मुश्किल हो गया।

सोमवार, 15 फरवरी

जैसे ही हम शाला भवन में घुसे रैल्फ ने बताया कि उसने अपने पिता के साथ नक्शे पर डॉयल्सटाउन देखा और वह रास्ता भी तलाशा जिस रास्ते से हम गए थे। रैल्फ ने हमारे न्यू जर्सी और पेन्सिलवेनिया के नक्शे पर वह रास्ता दिखाया और अन्य बच्चे भी अपनी-अपनी प्रतिक्रियाएँ बताने लगे।

मैंने बच्चों को खुलकर बात करने को प्रोत्साहित किया ताकि पता चले कि उनकी सर्वाधिक रुचि किस चीज़ में थी और वे किस बारे में और जानना चाहते हैं। जिस कमरे में कठपुतलियाँ थीं उसने सबका ध्यान आकर्षित किया था। रैल्फ को इण्डियन अवशेष अच्छे लगे। सोफिया को कताई कक्ष अच्छा लगा। एना को बैलगाड़ियाँ और घोड़ागाड़ियाँ आकर्षक लगीं। वॉरेन को बन्दूकें अच्छी लगीं। अधिकतर समय बच्चे सिर्फ अपने संस्मरण सुना रहे थे। यह संकेत न मिल पाया कि उन्होंने जो देखा उसके बारे में वे और जानना चाहते हैं।

आज श्री विल्सन आए और उन्होंने ढाई से साढ़े चार बजे तक लड़कों के साथ काम किया और उन्हें मोहे रखा। दो घण्टों तक बच्चों का ध्यान केन्द्रित रखना बहुत मायने रखता है। उन्होंने संक्षेप में बात समझाई, क्या करना है वह करके दिखाया और तब सबको काम पर लगा दिया। आरियों का कुशल व सुरक्षित उपयोग उन्हें सिखाया। जाने से पहले उन्होंने बच्चों को ठीक से समझा दिया कि सप्ताह के शेष दिन उन्हें क्या-क्या करना है।

मंगलवार, 16 फरवरी

आज शाम मिस एवरेट के साथ यह सोचते बिताई कि आगे कौन सी दिशा पकड़नी है। बच्चों को किताबों से प्यार है, अतः हमने आखिरकार यह तय किया कि जो कुछ हमने देखा उसके बारे में कुछ किताबें मिस एवरेट ले आएँ। इधर-उधर कुछ पढ़ने से शायद उनकी जिज्ञासा जगे।

बुधवार, 17 फरवरी

मिस एवरेट काफी सारी किताबें लाईं और पुस्तकालय की मेज़ पर रख गईं। खाने के बाद बच्चे उन्हें देखने लगे। वे उन चीज़ों के चित्र दिखाने मेरे पास आते रहे जो उन्होंने केवल संग्रहालय में ही नहीं बल्कि वहाँ जाते हुए रास्ते में देखी थीं, जैसे डेलवेयर नहर। वॉरेन, रूथ, एना, सोफिया, कैथरीन, डॉरिस और मे ने तकरीबन दो घण्टे किताबों के साथ बिताए। हेलेन और मेरी ने अधिक समय नहीं लगाया। ओल्गा के अलावा बाकी प्रिन्लैक बच्चों ने किताबों में झाँका तक नहीं। उनकी बात समझ में आती है।

शुक्रवार, 19 फरवरी

दिन के काम की योजना बनाने के बाद हमने मिस एवरेट द्वारा लाई गई किताबों पर बात की। हर बच्चे ने अपनी पसन्द का कोई चित्र दिखाया और उस पर बात की। जब भी मौका मिला, मैंने पूछा, "मैं सोच रही थी कि आसपास के वयस्क लोगों के पास ऐसी चीज़ें हैं या नहीं?" मे ने बताया कि उसके पास डल्सीमर नामक तार वाद्य है। कई बच्चों ने कहा कि उनके पास लकड़ी से बने प्याले और मक्खन निकालने की बिलौनियाँ हैं। मेरी ने कहा, "शायद हम अपना संग्रहालय बना सकते हैं।" कई बच्चों ने समुदाय के बुज़ुर्गों की बात बताई। मैंने सुझाया कि बच्चों को उनसे मिलना चाहिए। शायद हम भ्रमण के लायक अन्य स्थलों का पता भी लगा सकते हैं।

आज दोपहर हमने अपने रॉक गार्डन का काम शुरू किया। हमारे यहाँ पत्थरों को जोड़कर और बैठाकर बनाई गई एक पंक्ति है। जब सड़क चौड़ी की गई थी तो वह मिट्टी से अच्छी तरह ढँकी हुई थी। यह सड़क के किनारे छायादार जगह है। हमें पत्ते साफ करने पड़े और झाड़ियाँ हटानी पड़ीं। बाहर काम करने के लिए यह अच्छा दिन था और बच्चे काफी खुश थे।

मंगलवार, 23 फरवरी

बच्चों ने संग्रहालय के लिए चीज़ें इकट्ठी करना शुरू कर दी हैं। हमारे पास एक मक्खन-छाप, एक मक्खन-साँचा और एक पुराना गुलदान आ चुका है। किसी ने एक पालना देने का वादा किया है। मे अपना तानपुरा लाने वाली है।

बुधवार, 24 फरवरी

आज हमने अपने समुदाय के अतीत पर कुछ देर बातचीत की। रैल्फ ने बताया कि उसने सुना है कि स्कूल के सामने वाला मार्ग पहले ओल्डटाउन को जाने वाली घोड़ागाड़ी का मार्ग हुआ करता था। बच्चों को लगा कि पहाड़ के ऊपर से ओल्डटाउन जाने वाली यह सड़क वहाँ जाने के लिए अधिक कठिन रास्ता है। वे वहाँ से क्यों नहीं जाते थे जहाँ से हम आजकल जाते हैं? मैंने सुझाया कि अगर हम यह पता लगा सकें कि पायोनियर लोग यह कैसे तय करते थे कि रास्ते कहाँ बनेंगे, तो शायद हमें अपने सवाल का उत्तर मिल जाए। हम मिस एवरेट द्वारा लाई किताबों पर लौटे और मैंने बच्चों की पठन क्षमता के हिसाब से ये किताबें बाँट दीं। बच्चे दो-तीन के समूहों में बैठ यह जानने की कोशिश करने लगे कि पायोनियरों के ज़माने में यात्रा कैसे की जाती थी। उन्हें यह पता नहीं था कि वे सामग्री कैसे तलाशें, सो मैंने उन्हें विषय सूची और तालिका का उपयोग करना सिखाया। हमने बोर्ड पर कुछ मुख्य शब्दों की सूची बना ली ताकि वे "यात्रा" के अलावा दूसरे शब्दों के सहारे भी सूचना तक पहुँच सकें। मैं बच्चों को व्यक्तिगत स्तर पर यह बताने लगी कि नोट्स कैसे लिए जाते हैं।

रूथ ने बताया कि उसकी माँ कुछ ऐसे लोगों को जानती हैं जो हमें कस्बे के बारे में बता सकते हैं। एण्ड्रयूस् बहनों और रैल्फ ने हमें दो अन्य लोगों के नाम बताए। रूथ ने जोड़ा कि उसकी माँ का सुझाव है कि हम अपने सवाल तैयार करके ले जाएँ ताकि लोगों को हमें वह बताने में आसानी हो जो हम जानना चाहते हैं। माताएँ सच में शिक्षकों की मददगार बन सकती हैं!

शुक्रवार, 26 फरवरी

आज हमने अपने कठपुतली नाटक की तैयारी पूरी गम्भीरता से शुरू कर दी। हमने नाटक को दुबारा पढ़ा और पात्रों की सूची बनाई। हर बच्चे ने अपनी पसन्द का किरदार चुना। जहाँ किसी एक भूमिका के एक से ज़्यादा दावेदार

थे, वहाँ उन्हें जाँचा गया और बच्चों ने खुद निर्णय लिया। सब पिनोकिओ की भूमिका चाहते थे और जाँच के बाद सोफिया को यह किरदार दिया गया। एना इस पर रोने लगी और बोली कि अगर पिनोकिओ का किरदार उसे नहीं मिला तो वह नाटक में हिस्सा नहीं लेगी। रूथ बोली, "ऐसा ही एना पिछले साल भी करती थी। अगर उसकी नहीं चलती थी तो वह सहयोग नहीं करती थी। पर यह तो हमारे साथ न्याय नहीं है और न ही यह एना के लिए अच्छा है कि हर बार उसी की चले।" दिन खत्म होने को था, हम सब थके हुए थे, सो मैंने सुझाया कि हम यह मसला सोमवार तक के लिए मुल्तवी कर दें। तब शायद हम इसे दूसरी तरह से देख पाएँ। रैल्फ और फ्रैंक के अलावा सभी बच्चे नाटक में हिस्सा लेना चाहते हैं। वे दोनों दृश्य सज्जा और प्रकाश व्यवस्था करना चाहते हैं।

सोमवार, 1 मार्च

सुबह साढ़े नौ बजे दरवाज़े पर झिझक भरी दस्तक हुई, और जब मैंने द्वार खोला तो आँसुओं से सना चेहरा लिए एक अस्तव्यस्त-सा लड़का वहाँ खड़ा था। उसने मुझे एक मुड़ा-तुड़ा लिफाफा थमाया, जो पहले बन्द रहा होगा पर अब खुला था। मैंने पत्र निकालकर पढ़ा। उसमें लिखा था कि पत्र वाहक पाँचवीं जमात का नया शिक्षार्थी है। साथ ही लिखा था कि मुझे उसके साथ जैसा ज़रूरी बन पड़े वैसा बर्ताव करने की अनुमति है क्योंकि थॉमस एक बदमिज़ाज और झूठ बोलने वाला लड़का है। पत्र में मुझे उस पर कड़ी नज़र रखने को कहा गया था। "तुमने यह पढ़ा है?" मैंने थॉमस से पूछा। उसने हाँ कहा। मैंने उसके सामने ही पत्र की चिन्दी-चिन्दी कर दी और कहा कि हमारे लिए उसका कोई मतलब नहीं था क्योंकि इस शाला में हम किसी व्यक्ति को उसके काम से आँकते हैं, दूसरों की उसके बारे में राय से नहीं। हमने उसे एक मेज़ दी और काम पर लगा दिया।

आज एना के साथ बात करने का कुछ समय मिल सका। दरअसल यह बड़ी सहजता से हो गया। दोपहरी को हम दोनों कुछ पल अकेले थे। मैंने कहा, "एना, नाटक में तुम्हारी भूमिका पर निर्णय नहीं हो सका। समूह इसकी चर्चा करे, इससे पहले मैं तुमसे कुछ बात करना चाहती थी।" मैंने समझाया कि समूह उसके बारे में क्या सोचता है यह बताना मेरे लिए ज़रूरी नहीं है। पर मुझे क्या लग रहा है यह जानना शायद उसे ठीक लगे। मैंने छोटी-छोटी बिना सोचे-समझे की गई कई बातें उसे याद दिलाईं जो अपने आप में महत्वपूर्ण नहीं थीं, पर कुल मिलाकर

एक ऐसे इन्सान की छवि बनाती थीं जिसे लोग आसपास नहीं चाहते। तब मैंने तमाम अच्छी बातें भी याद कीं जो उसने की थीं। मैंने कहा, "तुम सक्षम लड़की हो, एना। समूह तुम्हारी कीमत तब समझेगा जब तुम सब कुछ जितना अच्छा कर सकती हो वैसे करो।" एना ने जाने से पहले कहा कि वह ऐसा इन्सान बनने की कोशिश करेगी जिसके साथ जीना आसान हो। उसने नाटक में दूसरी भूमिका स्वीकार ली।

माताएँ सप्ताह में दो बार अलग-अलग घरों में इकट्ठी हो नाटक का अभ्यास कर रही हैं। आज सब मौज में थीं। श्रीमती थॉमसन और श्रीमती विलियम्स ने हमारे लिए "आइरिश धोबन" का नाच किया। इनेज़ जोन्स केक लाईं।

गुरुवार, 4 मार्च

पिछले तीन दिनों से हम सामाजिक अध्ययन के पीरियड में यह शोध कर रहे हैं कि पायोनियरों के ज़माने में यात्रा कैसे की जाती थी। इन बच्चों को उपयोगी सामग्री छाँटना सिखाना कठिन काम है। बावजूद इसके कि साल की शुरुआत में हमने काफी समय ठीक यही सीखने में लगाया था, बच्चे पूरे के पूरे पन्नों को उतार लेना चाहते हैं। किसी विषय पर सामग्री इकट्ठा करना किसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए सामग्री निकालने से भिन्न लगता है।

आज बड़ा व्यस्त और थकाऊ दिन था। मैं सुबह आठ बजे आई थी। तब से शाम छह बजे ड्रेस रिहर्सल तक बाहर निकलने तक का वक्त नहीं मिला। लड़कियों ने माताओं के नाटक के लिए पर्दे लगाने में और चीज़ों की व्यवस्था करने में मदद की। नाटक की जानकारी देने की, खाने-पीने के सामान की और टिकटों की पूरी ज़िम्मेदारी माताओं ने खुद सम्हाल ली है। यहाँ तक कि शहर से अतिरिक्त कुर्सियों तक की व्यवस्था उन्होंने कर ली है।

शुक्रवार, 5 मार्च

जब बड़े बच्चे यात्रा का अध्ययन कर रहे थे, मैंने छोटे बच्चों के साथ लगभग एक घण्टा बिताया। उनका खेलघर अब तैयार है। उन्होंने छोटी-छोटी मेज़-कुर्सियाँ आदि बनाई और रँगी हैं। उन्होंने दरियाँ बुनी हैं जिनमें से एक कुण्डलियों वाली दरी है। लड़कियों ने पर्दे सिए हैं, बिछौने बनाए हैं, और घरेलू साज़ो-सामान तैयार किया है। हमने अधिकतर समय खेलघर बनाने के उनके

अनुभवों की कहानियों को लिखने में लगाया। बच्चों को लिखने का काफी अनुभव मिल चुका है। इससे लेखन से जुड़े आवश्यक कौशलों में सुधार हुआ है। प्राथमिक स्तर के बड़े बच्चे अब सही लम्बाई की मौलिक कहानियाँ लिखने लगे हैं।

आज शाम का प्रदर्शन अच्छा रहा। रैल्फ के जीजा ने सामुदायिक गायन में नेतृत्व किया। नाटक के बाद उसने गिटार बजाया और काऊबॉय गीत सुनाए। सामेटिस परिवार की सबसे बड़ी बेटी ने एक इतालवी ऑर्गन-वादक के विषय में कुछ पढ़कर बताया। मध्याह्न के गर्म खाने के लिए माताओं ने पन्द्रह डॉलर इकट्ठे किए।

नाटक के बाद श्रीमती विलियम्स और मैंने बैठकर रैल्फ के बारे में बातचीत की। उन्होंने कहा कि उन्हें इस बात की खुशी है कि उनके अलावा भी कोई रैल्फ को पसन्द करता है। उन्होंने मुझे बताया कि वे जब से इस इलाके में आई हैं उन्होंने रैल्फ के बारे में भयानक कहानियाँ सुनी हैं। "रैल्फ के अन्दर कुछ अच्छे गुण भी हैं, मेरा यह विश्वास है," वे बोलीं, "पर कोई संवेदनशील और धैर्यवान व्यक्ति ही उन्हें बाहर निकाल सकता है।" मैंने उनसे कहा कि रैल्फ दूसरे जीवन्त लड़कों से बुरा नहीं है। असल में, कई बार तो उसका व्यवहार बहुत अच्छा रहा है। "इस साल वह पहले की तरह गैराज की ओर भी नहीं जाता," श्रीमती विलियम्स ने टिप्पणी की। "वहाँ जो आदमी हैं वे उसे छेड़ते हैं और बेहूदी भाषा का इस्तेमाल करते हैं। यह तो किसी भी लड़के के लिए अच्छा नहीं है। और फिर उसका पिता भी तो उसे ठीक से नहीं सम्हालता।"

सोमवार, 8 मार्च

आज सुबह बड़े बच्चों ने यात्रा के बारे में जो कुछ वे पढ़ रहे थे उस पर बातचीत की। दूसरी बातों के साथ उन्होंने यह भी पता लगाया था कि पुराने मार्ग ठीक वहीं बनाए गए थे जिन रास्तों पर इण्डियन लोग आया-जाया करते थे। उन्होंने यह भी पढ़ा था कि वे उद्योग जो यात्रा से जुड़े थे प्रारम्भिक उद्योगों में से थे। उन्होंने इस बात पर चर्चा की कि तब गाड़ियाँ ऐसे बनाई जाती थीं कि वे ऊबड़-खाबड़, कच्चे मार्गों पर चल सकें। मैंने पूछा कि क्या वे अन्य प्रारम्भिक उद्योगों के बारे में भी कुछ जानते हैं। बच्चों ने कुछ कयास लगाए तथा और जानकारी इकट्ठा करने की इच्छा जताई।

श्री लॉरेंज़ो हमारे 4-एच क्लब के एजेंट हैं। वे हमारे खेल मैदान के सौन्दर्यीकरण की योजनाओं में रुचि जताते रहे हैं। उन्होंने कहा कि वे हमारी मदद करने के लिए श्री ब्लैकबर्न को स्कूल में आमंत्रित करेंगे। श्री ब्लैकबर्न लैण्डस्केप विशेषज्ञ हैं। आज वे पधारे। उन्होंने कहा कि हमारी योजना बिलकुल सही और स्पष्ट है। हम शाला भवन के चारों ओर फूलों की क्यारियाँ नहीं बना सकते क्योंकि छत का छज्जा टपकता है। मैदान के चारों ओर क्यारियाँ बनाने से खेलने की जगह में से करीब छह फुट ज़मीन कम हो जाएगी जबकि मैदान वैसे ही छोटा है। जंगल का दृश्य छिपाना नहीं चाहिए बल्कि वहाँ कुछ सफाई की ज़रूरत है। बाहरी भवनों को हरा रंग देना चाहिए ताकि वे पृष्ठभूमि में घुलमिल जाएँ, और उनके इर्द-गिर्द हमें झाड़ियाँ और देवदारु के पेड़ बोने चाहिए। शाला भवन के कोनों में झाड़ियाँ लगाने पर भवन अधिक स्थायी लगेगा। ये सब हमारे प्रश्नों के जवाब थे। श्री ब्लैकबर्न को रॉक गार्डन व दरवाज़े के दोनों ओर गुलाब की लताओं का हमारा विचार भी अच्छा लगा। उनकी सलाह थी कि हम स्थानीय झाड़ियाँ ही लगाएँ। उन्होंने खाद डालकर पेड़-पौधों को कैसे बोया जाए, यह भी समझाया। उनका सुझाव था कि स्कूल में यह सब करने के बाद बच्चे अपने घरों में भी ठीक ऐसी ही चीज़ें करें। वे भी यह समझते हैं कि हमारे समुदाय के पास बहुत कुछ ऐसा है जो सभी के जीवन को समृद्ध कर सकता है।

श्री विल्सन कठपुतलियाँ बनाने में लड़कों की मदद करने आए। उन्होंने रैल्फ से कहा, "ठीक है, रैल्फ, अब तुम जान चुके हो कि यह कैसे किया जाता है। अब तुम दूसरों की मदद करो।" उन्होंने रैल्फ को सिखाया कि टोली में काम कैसे बाँटा जाए, सबके काम को दिशा कैसे दी जाए, गलतियाँ हों तो उन्हें कैसे सुधारा जाए। उन्होंने अगले सोमवार तक रैल्फ को इस काम का मुखिया बना दिया। उन्हें लगता है कि रैल्फ एक अच्छा लड़का और लायक शिष्य है। मैं श्री ब्लैकबर्न और विल्सन को हमारे लड़के-लड़कियों के साथ काम करते देखती रही और मेरे मन में उनके प्रति गहरी श्रद्धा और प्रशंसा का भाव उपजा। वे चन्द सरल शब्दों में अपनी बात सामने रख देते हैं और आचरण में वांछित बदलाव के बीज बो देते हैं। वे अपने उद्देश्य बिलकुल साफ देख पाते हैं और उनके प्रयास उन्हीं उद्देश्यों की दिशा में केन्द्रित होते हैं। काश मैं भी यही कर पाती। अक्सर मुझे लगता है कि मैं "विनि द पूह" और उसके दोस्त "पिगलेट" की तरह हूँ, जो किसी अस्पष्ट वस्तु की तलाश में झाड़ी के इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं।

गुरुवार, 11 मार्च

छोटे बच्चे भी कठपुतली मंचन की माँग करते रहे हैं। क्योंकि डोरेवाली कठपुतलियाँ चलाना कठिन है सो मैंने उनके साथ हाथ कठपुतलियों का इस्तेमाल करने का फैसला किया। मैंने उन्हें कहा कि वे मंचन के लिए कहानी का चुनाव कर लें। उन्होंने यह बात इतनी गम्भीरता से ली और वे खोज में कुछ यों जुटे कि बड़े बच्चों में से एक को कहना पड़ा, "इतनी चुप्पी है कि लगता है मानो सारे नन्हे घर चले गए हों।"

शुक्रवार, 12 मार्च

प्राथमिक समूह के बच्चे यह तय नहीं कर पाए कि उन्हें "जो बाइज़ नेल्स" (जो ने कील खरीदे) या "हैन्सेल और ग्रेटेल" में से किस कहानी को नाटक का रूप देना है। आखिरकार उन्होंने "हैन्सेल और ग्रेटेल" को चुना क्योंकि दूसरी कहानी में दृश्य बार-बार बदलता है।

पिछले कुछ सप्ताहों से वानिकी क्लब की बैठकें बढ़िया चल रही हैं। हम विविध प्रकार के पत्थर इकट्ठा कर उनकी पहचान कर रहे हैं। आज हमने अपने व्यक्तिगत संग्रहों को प्रदर्शन के लिए प्लाईवुड पर सजाने का काम शुरू किया।

शनिवार, 13 मार्च

हमारे अखबार का दूसरा अंक इतना लम्बा है और हेक्टोग्राफी में इतना फैलावड़ा मचता है कि इच्छा हुई कि छापे की मशीन को ही घर ले आऊँ और स्कूल के बदले वहीं छपाई पूरी करूँ। एना और रूथ कल रात मेरे साथ घर आईं। आना दरअसल ओल्गा को था, पर उसके पिता ने अनुमति नहीं दी तो उसकी जगह रूथ आई। लड़कियों के लिए यह अच्छा अनुभव होता है क्योंकि उन्हें घर से बाहर समय बिताने का मौका ही नहीं मिलता। एना ने हिसाब लगाया कि एक अखबार छापने में हमें कितना समय लगता है। समूचे अखबार को टाइप करने में सात घण्टे लगे और उसकी पैंतीस प्रतियाँ छापने में साढ़े चार घण्टे लगे। इस तरह, लेख लिखने के समय को न जोड़ें तब भी तकरीबन बारह घण्टे लगते हैं। पर क्योंकि हम साल में केवल तीन अंक ही छापने वाले हैं, हमें लगता है कि इस पर लगाए गए प्रत्येक पल का सच में अच्छा उपयोग हुआ है। बच्चों के अधिकतर लेखन को एक उद्देश्य देने में और समुदाय को स्कूल से

परिचित करवाने में इसकी जो कीमत है उसे नापा नहीं जा सकता।

दोपहर में हम लोग मेरे पिता के फार्म पर घूमते रहे, जहाँ हमें क्वॉर्ट्ज़ के स्फटिक, बलुआ पत्थर, सलेटी पत्थर, चूना पत्थर और चकमक पत्थर मिले। हमने अपने संग्रहालय के लिए उन्हें इकट्ठा किया। काश मैं यह अक्सर कर पाती। एक शिक्षक और बच्चों के बीच इस तरह से घनिष्ठता आ पाती है।

सोमवार, 15 मार्च

आज पहला काम जो हमने किया वह था अपने अखबार को पढ़ना। पढ़ना खत्म किया ही था कि थॉमस, नया लड़का, बोल उठा, "वाह! क्या अखबार है।" उसकी आकस्मिक घोषणा से सब खुशी से खिलखिला उठे।

आज दोपहर बच्चों को दो हिस्सों में गाना सिखाने का पहला प्रयास किया। श्रीमती विलियम्स लगभग इसी दौरान आईं और उन्होंने बताया कि स्कूल के बाहर गायन की आवाज़ें कितनी अच्छी लग रही थीं। कई लड़के अब भी गहरी आवाज़ में गाते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि लड़कों को ऐसे ही गाना चाहिए। मैं छोटे लड़कों को ऐसे तैयार करने की कोशिश करूँगी कि संगीत के प्रति उनका दृष्टिकोण ज़रा सही हो।

सोमवार, 22 मार्च

आज हमने अपना पहला द्विभागीय गीत गाया, एक प्यारी-सी फ्रेंच लोक धुन। बच्चों को दो हिस्सों में गाना पसन्द आ रहा है। कुछ लड़कियाँ संगीत को काफी अच्छे ढंग से पढ़ने लगी हैं। सोफिया हमारी चहेती निर्देशिका बनती जा रही है।

स्कूल के बाद मेरे भाई ने लड़कों को शाला भवन के द्वार के दोनों ओर भूर्ज की जालियाँ बनाना सिखाया।

मंगलवार, 23 मार्च

आज लड़कियों को अपनी किताबों में कुछ नमूनों के चित्र मिले और उनका कहना था कि वे उन्हें बनाना चाहेंगी। कई लड़के कॉनेस्टोगा नामक गाड़ियों और घोड़ागाड़ियों के नमूने बनाना चाहते हैं। जॉर्ज की इच्छा लकड़ी के पात्र तराशने की है। मैंने इस सूची में एक और बात जोड़ी। मैंने कहा कि वे पायोनियर जीवन के कुछ दृश्यों के चित्र भी बना सकते हैं जिन्हें हम दीवार पर

लटकाएँ। इससे हमारे कमरे की सुन्दरता बढ़ेगी और उसमें हमारी रुचि भी बढ़ेगी। एना और सोफिया ने फौरन यह काम करने की इच्छा जताई। इनमें से कुछ गतिविधियाँ आज ही शुरू कर दी गईं। फ्रेंक दोपहर भर रैल्फ के कानों में विद्रोही स्वर फूँकता रहा। जब सब बाहर खेलने गए तो मैं फ्रेंक के साथ बैठी। आजकल उसका चहेता जुमला है "क्या फायदा?"। मैंने उससे हरेक चीज़ के "फायदे" की बात की। मैंने कहा, "फ्रेंक, हरेक गतिविधि में भाग लेने की कोशिश करो। जब हम किसी चीज़ का हिस्सा बनते हैं तो हमें अकेलापन महसूस नहीं होता।" बाहर जाते-जाते वह कह गया कि "मैं कोशिश करूँगा।" स्कूल के बाद रैल्फ और रूथ ने मुझे समुदाय के तीन बुज़ुर्गों के घर तक ले जाने में मदद की ताकि हम उनसे साक्षात्कार की बात तय कर सकें। रैल्फ ने कहा कि फ्रैंक भी आना चाहता है। हम चारों ने अच्छा समय बिताया, अधिकांश बातचीत फोर्ड कम्पनी की गाड़ियों के गुणों पर होती रही।

गुरुवार, 25 मार्च

हमारी सहायक क्लब की बैठक में कैथरीन ने प्रस्ताव रखा कि, क्योंकि बसन्त का मौसम आ गया था, खेल समिति बाहर की गतिविधियों की योजना बनाए, जैसा पतझड़ के समय किया गया था। समूह का फैसला था कि उसकी बैठक गुरुवार को ही हो क्योंकि यदि समितियों को मिलने की ज़रूरत हो तो वे शुक्रवार को मिल सकती हैं और हम बिना समय ज़ाया किए सोमवार को काम शुरू कर सकेंगे। नई खेल समिति का गठन किया गया। उसमें एल्बर्ट को भी चुना गया क्योंकि बच्चों को लगा कि छोटे बच्चों का भी कोई प्रतिनिधि खेल समिति में होना चाहिए।

शनिवार, 27 मार्च

आज सुबह सोफिया, कैथरीन, ओल्गा, जॉर्ज और मैं श्री हैरल्ड स्मॉल से मिलने गए। फ्रैंक को भी हमारे साथ चलना था पर ओल्गा ने बताया कि शायद उसकी तबीयत खराब है। जब हमने श्री स्मॉल से मिलना तय किया था तो हमने उनके पास अपने सवालों की एक सूची छोड़ी थी। आज वे उनके जवाबों की तैयारी के साथ मिले। जॉर्ज को छोड़ सबने बातचीत अपनी कॉपियों में दर्ज की। कैथरीन खास तौर पर सजग थी और उसने ढेरों सवाल पूछे। श्री स्मॉल ने हमारे गाँव की प्रारम्भिक बसावट के बारे में काफी कुछ बताया। लौटते हुए हम लट्ठों

से बने उस कोठार को देखने रुके जिसके बारे में श्री स्मॉल ने हमें बताया था। वह पूरी तरह लट्ठों से बना था और आज भी अच्छी हालत में है। उसके मालिक ने हमें बताया कि यह कोठार लगभग दो सौ साल पुराना है।

दोपहर को डॉरिस, मे और रूथ मेरे साथ श्रीमती व श्री ब्राउन से मिलने गईं। वे वैली व्यू की प्रथम बसावट में रहते हैं और स्थानीय किस्सों की उनके पास भरमार है। उनके पास मूल पट्टा भी था, जिसकी हमने नकल कर ली। शाम साढ़े चार बजे एना, मेरी, हेलेन और एडवर्ड मेरे साथ श्री जॉन रेबर्न से मिलने शहर गए। उन्होंने हमें अपनी दादी की भोजन बनाने की विधियों के बारे में बहुत कुछ बताया।

मंगलवार, 30 मार्च

हरेक बच्चा छोटे से ईस्टर अवकाश के बाद लौट आया है। हमने शनिवार की मुलाकातों पर बात की। मैंने बच्चों से कहा कि उनके पास ऐसी कीमती जानकारी है जिसे उन्हें लिख लेना चाहिए क्योंकि हमें वह किसी भी किताब में नहीं मिलेगी। ये बुज़ुर्ग जब नहीं रहेंगे तो यह सारी जानकारी भी उनके साथ ही गुम हो जाएगी। हमने सारी सामग्री विषय के अनुसार बोर्ड पर सूचीबद्ध कर ली। बच्चों ने वे विषय चुन लिए जिन पर वे लिखना चाहते थे, और उन्होंने तय किया कि वे उनसे सम्बन्धित सूचनाएँ अपनी कॉपियों में दर्ज कर लेंगे। फ्रैंक पूरे दिन गुस्साए रहा। आज शाम वह खराब ढंग से खेला और मुँह फुलाए रहा। दूसरे बच्चे रॉक गार्डन में काम करने को आतुर थे पर उसने वहाँ काम करने से इन्कार कर दिया।

बुधवार, 31 मार्च

आजकल सुबह इतनी खुशनुमा होती है कि बच्चे रॉक गार्डन में काम करने की अनुमति चाहते हैं। आज हमने सभी बच्चों के लिए आधा घण्टा बाहर काम करने का समय निकाला। हम अलग-अलग टोलियों में काम करते हैं, हरेक टोली का एक "बॉस" होता है। कितना मज़ा आता है उन्हें इसमें! वे अपने काम को नाटकीय बना लेते हैं और श्रमिक बन जाते हैं। आज एक "बॉस" ने आकर मुझे सूचना दी कि 11:20 की टोली का समय हो चुका है। लड़के ऊँची कूद के लिए एक सैण्डपिट भी खोद रहे हैं। उन्हें भविष्य में कूदने के लिए बगीचों के

बाड़ों की दरकार नहीं होगी।

इससे पहले कि मैं उनमें शामिल हो जाऊँ, चौथे समूह के बच्चे अक्सर मिलकर अपना पाठ पढ़ चुके होते हैं। आज वॉरेन उनका इंचार्ज था और उन्होंने एक-दूसरे को खूब सिखाया। वे उन शब्दों को भी नहीं छोड़ते जिन्हें वे नहीं जानते हैं। वे अर्थ के बारीक से बारीक रूपों पर भी बात करते हैं। वे शब्दों की ताकत के प्रति सचेत होते जा रहे हैं।

गुरुवार, 1 अप्रैल

कल रात मैंने मिस एवरेट के साथ काम किया और हम दोनों को ही लगा कि छोटे बच्चों को नाटक खेलने और भाषा सम्बन्धी गतिविधियों को करने के पर्याप्त मौके नहीं मिल पा रहे हैं। वाक्य बनाने और लेखन की गतिविधियाँ तो वे कर रहे हैं, पर वार्तालाप का अवसर योजना बनाने के अलावा नहीं मिल पाता। हमें लगा कि छोटे बच्चों को कुछ व्यापक अनुभव भी मिलने चाहिए। इनमें से कोई भी बच्चा कभी रेलगाड़ी में नहीं बैठा है। हमें पता है कि उनकी इसमें रुचि होगी और हमने तय किया कि शुरुआत इसी से करना उचित होगा।

आज सुबह मैंने बच्चों से बात की, यह पता लगाने के लिए कि वे रेलगाड़ियों के बारे में क्या जानते हैं और मैंने पाया कि वे बहुत कम जानते हैं।

आज हमने रसोई की अलमारियाँ साफ करने का समय निकाला ताकि सब सामान तरतीब से अगले सत्र के लिए रख दिया जाए, क्योंकि अब हम इस सत्र में गर्म मध्याह्न भोजन नहीं करेंगे। बच्चे इन सुहाने दिनों में बाहर पिकनिक ही करना चाहते हैं।

कल से हमने बाहर खेलना शुरू कर दिया, जैसा हम पिछले पतझड़ के मौसम में कर रहे थे, और आज यह साफ हो गया कि बच्चों को साथ-साथ खेलना फिर से सीखना होगा। वे इतना लड़ते-झगड़ते हैं। फ्रैंक काफी गुस्साता रहा है और अक्सर वही फसाद शुरू करता है।

सोमवार, 5 अप्रैल

छोटे बच्चों ने उन सभी बातों की सूची बनाई जो वे रेलगाड़ियों के बारे में जानना चाहते हैं। हमने जानकारी प्राप्त करने के लिए कई रेल कम्पनियों को एक

सामूहिक पत्र लिखा। बच्चों ने पत्र लिखवाया, जिसे मैंने बोर्ड पर लिख डाला। फ्रेड, मार्था और वर्ना पत्र की प्रतियाँ बना रहे हैं।

बड़े बच्चों ने अपनी गतिविधियाँ पूरे ज़ोर-शोर से शुरू कर दी हैं। लड़कियाँ अपने नमूने बना रही हैं और लड़के संग्रहालय के लिए वस्तुएँ। एना दीवार पर लटकाने के लिए 3' x 4' का चित्र बना रही है। आज उसने उसका रेखाचित्र बनाया और उसे बड़े पैमाने में ब्राउन पेपर पर उतार लिया। उसके चित्र में कॉनस्टोगा नाम की पुरानी गाड़ी है जिसके पीछे दो बच्चे नंगे पैर चल रहे हैं। एना ध्यान से पायोनियर काल की वेशभूषा का चित्र ढूँढती रही ताकि उसके चित्र में वेशभूषा सही हो। उसने बहुत हल्ला मचाया क्योंकि उसे चित्र मिल नहीं रहा था। तब रूथ और ओल्गा ने उसकी मदद की और वेशभूषा के बारे में उसे कुछ पढ़कर सुनाया।

मंगलवार, 6 अप्रैल

और अब यह मे है जो नाखुश है! आज सुबह कुछ देर मैंने उससे बातचीत की। पिछले कुछ समय से वह न तो खेल में हिस्सा लेती है, न गाती है। वह मुँह लटकाए घूमती रहती है। उसका सामान्य आचरण ही मानो बदल गया है। मैं इतना ही जान पाई कि उसे लगता है कि कुछ लड़कियाँ उससे जलती हैं। कारण वह नहीं जानती। मैंने उससे कहा कि उसे यह चिन्ता छोड़ देनी चाहिए कि दूसरे क्या सोचते हैं और अपने काम का मज़ा लेना चाहिए। सारी सुबह वह उदास-सी रही पर हार्मोनिका अभ्यास के दौरान अचानक चटक हो गई और उसने समूह के निर्देशन में भी भागीदारी की।

मे अकेली नहीं है जिसे परेशानी हो रही है। चारों बड़ी लड़कियों को हमारे कस्बे के जंगली फूलों के चार्ट पर काम करना था, पर उनमें बहसबाज़ी हो गई। हरेक लड़की ने अन्य लड़कियों पर काम से जी चुराने का आरोप लगाया। मैंने पूछा कि क्या वे बिना लड़े काम का बँटवारा करने लायक बड़ी नहीं हो चुकी हैं? उन्हें लगा कि यह बात सही थी। और अन्ततः कोई निर्णय ले ही लिया। पर सिर्फ इतना भर ही नहीं हुआ। इन्तिहा तब हुई जब थॉमस और रैल्फ भिड़ गए। थॉमस ने कुछ ऐसा किया जो रैल्फ को पसन्द नहीं आया और रैल्फ ने तड़ाक से मुक्का जड़ दिया। थॉमस का पारा चढ़ गया और वह रैल्फ से जा भिड़ा। मैंने थॉमस की कलाइयाँ ज़ोर से पकड़ लीं। उसकी आँखें लाल थीं और दाँत किटकिटा रहे

थे पर उसने मेरा प्रतिरोध नहीं किया। मैंने उसे शान्त करने के लिए उससे यथासम्भव शान्त स्वर में बातचीत की, पर अन्दर से मैं खुद हिली हुई थी। मैंने कहा कि अगर वह गुस्से में कुछ करेगा तो बाद में उसे खुद को पछतावा होगा। थॉमस जब कुछ शान्त हो गया तब मैंने रैल्फ से बात की। उसने माना कि वह आपा खो बैठा था। मैंने कहा कि हम नए लोगों से कितना खराब बर्ताव करते हैं। हम उन्हें आसानी से स्वीकारते नहीं हैं और इससे वे भी हम से तालमेल नहीं बैठा पाते। रैल्फ बोला कि ऐसा नहीं है कि हम कोशिश ही न करते हों, पर नए लोग खुद पागलपन करते हैं। मैंने समझाया कि नए लोगों के पास इतनी आज़ादी नहीं होती। और उन्हें आत्मनियंत्रण की आदत सीखनी पड़ती है जो हमारे जैसी शाला में बेहद ज़रूरी होती है। मैंने रैल्फ को याद दिलाया कि साल के शुरुआत में खुद उसे कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ा था और सब ने उसके प्रति कितना धीरज दर्शाया था जब वह समूह के सदस्यों के साथ सहकार करना सीख रहा था। रैल्फ ने तय किया कि वह थॉमस के प्रति सहनशील बनने की कोशिश करेगा।

इस सब के बाद आज मेरा मन गड़बड़ा गया था और मैंने अपनी सहायक शिक्षिका मित्र का आश्रय लिया। हमने विस्तार से इस नन्ही शाला के "उतार-चढ़ावों" पर बात की, और मिस एवरेट के पास से लौटते समय मैं सम्हल चुकी थी। उन्होंने वही सब दोहराया जो मैं पहले सैकड़ों बार सुन चुकी हूँ, पर जब मैं रोज़मर्रा की उलझनों में बहक जाती हूँ तो परिप्रेक्ष्य ही खो बैठती हूँ। उन्होंने मुझे फिर से पटरी पर लौटने में मदद की।

अगर ये बच्चे किसी औपचारिक शाला के परिरक्षित माहौल में होते, जहाँ कोई सद्भावी तानाशाह होता, तो ये तमाम समस्याएँ स्कूल में नहीं उभरतीं। तब स्कूल अधिक सुचारू रूप से चलता। पर समस्याएँ तो तब भी होतीं ही। वे होतीं और बाद में शायद तब उभरतीं जब उनका समाधान करना भी असम्भव होता। ये समस्याएँ स्कूल में उठें तभी बेहतर रहता है, क्योंकि वहाँ कोई परिपक्व व्यक्ति मौजूद रहता है, जिसे भले ही काफी कुछ अभी सीखना हो, पर उसे कम से कम बच्चों की समस्याएँ सुलझाने के लिए मार्गदर्शन करने का प्रशिक्षण तो मिला ही होता है। किसी औपचारिक स्कूल में फ्रैंक, रैल्फ और थॉमस को अनुशासनात्मक समस्या के रूप में देखा जाएगा। यहाँ, अनुकूलन की समस्याओं के बावजूद, वे हमारे छोटे से समाज में अपना सकारात्मक योगदान करना सीख रहे हैं। वे

वांछनीय आचरण सीख रहे हैं। हमारी शाला एक नैसर्गिक सामाजिक परिस्थिति है और बच्चे इसमें सहज रूप से खपकर ज़िम्मेदार नागरिक बनना सीख रहे हैं। यह अभ्यास भविष्य में व्यापक समुदाय में सक्रिय भागीदारी में उनके काम आएगा।

बुधवार, 7 अप्रैल

छोटे बच्चे हमारे पुस्तकालय की किताबों में रेलगाड़ियों की कहानियाँ तलाशते रहे हैं। जब उन्हें कोई कहानी मिल जाती है तो वे उस किताब में निशान के लिए कागज़ लगा देते हैं और उसे मेज़ पर रख देते हैं। वे ढेरों कहानियाँ ढूँढ चुके हैं। जिन बच्चों ने अभी-अभी आना शुरू किया है, उन्होंने भी इसमें मदद की।

गुरुवार, 8 अप्रैल

मुझे पता चला है कि मे की बड़ी बहन को लेकर पिछली शिक्षिका को परेशानी झेलनी पड़ी थी। वह भी आत्मदया से ग्रस्त थी। उसे लगता था कि सब उसे नापसन्द करते हैं और जानबूझकर उसके साथ बदसलूकी करते हैं। यही कारण है कि हाई स्कूल में भी उसे कुछ खास पसन्द नहीं किया जाता। लगता है कि मे उसकी नकल कर रही है। काश मैं जानती कि इसके बारे में क्या करना चाहिए। दोपहर के घण्टे में मैंने मे के साथ बातचीत की और उसे बताने की कोशिश की कि लोग ऐसे लोगों को पसन्द करते हैं जो समूह का हिस्सा बनना पसन्द करते हैं और जो स्कूल को खुशमिज़ाज बनाने में अपनी इच्छा से योगदान देते हैं। मे ने सर्दियों भर इतनी मेहनत की है और समूह उसके विनोदप्रिय स्वभाव को सच में पसन्द करता है। जो वह महसूस कर रही है वह निराधार है। दोपहर बाद मे को दूसरे बच्चों के साथ खेलते देख मुझे अच्छा लगा।

रेलगाड़ियों से जुड़े जो सवाल नन्हों ने पूछे हैं वे अब एक चार्ट पर आ चुके हैं। आज हरेक बच्चे ने पढ़कर उनके जवाब तलाशने शुरू किए।

आज इतने सप्ताह बाद पता चला कि फ्रैंक जैसा बर्ताव कर रहा है उसका कारण क्या है। उसके पिता के पास घोड़ा नहीं है, न इतने पैसे कि वे एक घोड़ा खरीद सकें। वे खेत जुताई के लिए किसी को लगा भी नहीं सकते। सो उन्होंने हल को अपनी गाड़ी के पीछे लगा लिया है और जब वे गाड़ी चलाते हैं तो फ्रैंक

उसे सीधा रखता है। यह कहना कि यह कठिन काम है इसे नर्म शब्दों में व्यक्त करना है। पिछले दो सप्ताहों में फ्रैंक दोपहर को बीमार होने के बहाने तीन दिन तक लगातार घर लौटता रहा है, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि मुझे यह बात पता चले। उसकी कड़वाहट का यही कारण है।

शुक्रवार, 9 अप्रैल

आज जमकर बरसात हुई, सो हमें अन्दर ही सूरज की छटा खुद बनानी पड़ी। सुबह पहले हमने गीत गाए। ये बच्चे कितना सुन्दर गाते हैं! वे बड़े ध्यान से शब्दों का साफ उच्चारण करते हैं और भावनाओं के साथ गाते हैं। उन्होंने बाख की एक सुन्दर सुर पर बाइबल के आठवें भजन-गीत को गाया। वे वाद्यों की संगत के बिना गाते हैं और मेरे सभी निर्देशों का पालन करते हैं। इसके सौन्दर्य ने मुझे विह्वल कर दिया।

मैं रैल्फ को देख रही थी, जो गा नहीं रहा था, पर उसके चेहरे का एकाग्र भाव बता रहा था कि वह भी उद्वेलित था, जैसे बाकी सभी बच्चे भी थे। गाने के बाद कुछ पल कमरे में मौन छाया रहा, और तब – मेरी ने नाक सिनकी।

छोटे बच्चों ने अपनी माँओं को खत लिखा जिसमें उन्होंने मंगलवार को ट्रेन यात्रा पर जाने की अनुमति चाही। वे बेहद आतुर थे। हमने पहले बात की और तय किया कि पत्र में क्या लिखा जाएगा, और बोर्ड पर उन शब्दों को लिखा जिनकी वर्तनी उन्हें आनी चाहिए थी। हरेक बच्चे ने अपना पत्र खुद लिखा और मैंने भूल सुधारने में मदद की।

सहायक क्लब की बैठक में आज बखेड़ा हुआ। हाल में खूब विवाद होने लगे हैं। प्रिन्लैक और ओल्सेउस्की परिवारों के बीच खटपट चल रही है, और बच्चे ये झगड़े स्कूल ले आते हैं। ओल्सेउस्की बच्चों को रूथ से परेशानी है और रूथ को उनसे। सामेटिस बच्चों को रूथ और ओल्सेउस्की बच्चों से परेशानी है। मे को उन सबसे परेशानी है। फिलहाल यह विवाद लड़कियों तक सीमित है। मैं सोचने की कोशिश करती रही कि यह सब शुरू कैसे हुआ होगा।

सोमवार, 12 अप्रैल

आज रैल्फ बिगड़े मिज़ाज में स्कूल पहुँचा था। कई लड़कियों ने उसे छेड़ना शुरू कर दिया और उससे मामला और भी बिगड़ गया। कक्षाएँ प्रारम्भ होने से पहले

वह गेंद से खेलता रहा और असावधानी के कारण उसने खिड़की का एक काँच तोड़ डाला। उसने रूथ पर हुकुम चलाते हुए काँच साफ करने को कहा, लेकिन मैंने कहा कि यह काम उसी का है। उसने झाड़ू लगा काँच इकट्ठा किया, खिड़की पर लगे रह गए काँच को हटाया और पुट्टी को भी खरोंचकर निकाल दिया। शारीरिक मेहनत ने उसे शान्त कर दिया। वह जब कक्षा में लौटा तो हम गा रहे थे। मैं यह देखकर हैरान और खुश थी कि रैल्फ भी गाने लगा।

नन्हे बच्चों ने *हैन्सेल और ग्रेटेल* नाटक की कठपुतलियाँ तैयार कर ली हैं और आज उन्होंने पहली बार उन्हें चलाने का अभ्यास किया। वे काफी अनगढ़ तरीके से कठपुतलियों को चला रहे थे पर उन्हें मज़ा बहुत आया।

मंगलवार, 13 अप्रैल

छोटे बच्चों ने अपनी प्रस्तावित रेल यात्रा पर बातचीत की। उन्होंने वे सारे सवाल फिर से देखे जिन्हें वे स्टेशन के एजेंट और कण्डक्टर से पूछना चाहते थे। हमने यात्रा के दौरान अपने आचरण पर भी बात की।

मिस एवरेट और मैं चौदह छोटे बच्चों के साथ गए। स्टेशन पर बच्चों ने अपनी-अपनी टिकटें खरीदीं। उन्होंने डाकबाबू को रेलगाड़ी में डाक का थैला रखते देखा। एण्ड्रयू को झण्डा दिखा गाड़ी शुरू करने का संकेत देने का मौका मिला। यात्रा के दौरान हम गैप से गुज़रे और कण्डक्टर ने कई रोचक स्थानों की ओर इशारा किया। कण्डक्टर बच्चों में रुचि ले रहा था। वह बच्चों को भोजन कक्ष दिखाने ले गया और उसने उन्हें बैठक में बैठने की अनुमति भी दी। जेम्सबर्ग में हमने दूसरी गाड़ियों को स्टेशन पर आते देखा और सीटियों और सिग्नलों के बारे में जाना। वहाँ पाँच व दस सेंट वाली दुकान से हमने रेलगाड़ी की कुछ किताबें खरीदीं और सोडा स्टोर से आइसक्रीम ली।

जब मिस एवरेट और मैं छोटे बच्चों के साथ थे तो उस दौरान मिस होप्पॉक, जो एक सहायक शिक्षिका हैं, बड़े बच्चों को समुदाय के पुराने बाशिन्दे श्री लिविंगस्टोन के साथ साक्षात्कार के लिए ले गईं। बाद में उन्होंने नहर के किनारे पिकनिक की। जब हम लौटे तो बड़े बच्चे अपने अनुभव सुनाने को आतुर थे, और इसी तरह छोटे बच्चे अपनी यात्रा के अनुभव सुनाने को बेचैन थे। अगले आधे घण्टे दोनों समूहों ने अपनी-अपनी बात बताई।

गुरुवार, 15 अप्रैल

आज सामाजिक अध्ययन के पीरियड में बच्चों ने प्रारम्भिक स्कूलों पर चर्चा की। सबने चर्चा में हिस्सा लिया और आज उन्हें अब तक हुई तमाम चर्चाओं से कहीं अधिक मज़ा आया। श्री लिविंगस्टोन ने बच्चों को हमारे स्कूल के इतिहास के बारे में बताया था। जब वे खुद एक छोटे से लड़के थे उस समय स्कूल कैसा लगता था, वे कौन से खेल खेला करते थे, आदि।

मार्था ने कल रात ट्रेन यात्रा के बारे में एक कहानी लिखी और उसे स्कूल लेती आई। इससे बाकी बच्चों में भी कहानी लिखने की इच्छा पैदा हुई। मार्था ने कहा कि वह रेलगाड़ी पर एक किताब बनाना चाहती है। यह विचार सबको पसन्द आया। मार्था ने छोटे बच्चों को उन शब्दों के हिज्जे बताए जो वे नहीं जानते थे। इस बीच मैं बड़े बच्चों के साथ काम करती रही। क्लब बैठक के दौरान बच्चों ने अपने खेल के बारे में एक और निर्णय लिया। अब तक रैल्फ और फ्रैंक हर सप्ताह अपनी-अपनी टोलियों को चुनते रहे थे। मेरी ने सुझाया कि यह विशेषाधिकार दूसरे बच्चों को भी दिया जाए। बच्चों ने इस पर काफी सलीके से बातचीत की और अन्ततः तय किया कि आज फ्रैंक और रैल्फ ही टोलियाँ चुनें। अगले सप्ताह जिन दो लोगों को उन्होंने सबसे पहले चुना होगा वे टोलियाँ चुनेंगे। उसके बाद के सप्ताह में दूसरे नम्बर पर चुने गए बच्चों की बारी होगी और जब तक सभी बच्चों को बारी नहीं मिलती, वे बदल-बदलकर टोलियों के नेता चुनते रहेंगे।

शुक्रवार, 16 अप्रैल

जितने काम हमें करने हैं उनके लिए दिन छोटा पड़ने लगा है! अँग्रेज़ी की कक्षा में हमने अपनी वाचिक अशुद्धियों की समीक्षा की। हमने आम तौर पर बोलने में होने वाली भूलों के सही रूप की सूची बनाई। हमारी सूची में बयालीस वाक्य थे। अपने बोलने के प्रति बच्चे कितने सचेत हो गए हैं यह देखना बड़ा रोचक था। वे फटाफट वाक्य सुझा रहे थे।

हमारी क्यारी में ट्यूलिप के फूल निकल आए हैं और हमारे खेल के मैदान में रंगों की छटा बिखेर रहे हैं। कई लोग हमें बता चुके हैं कि फूलों के कारण हमारा मैदान कितना प्यारा लगने लगा है। बच्चे इससे बेहद खुश हैं और रोज़ सुबह नए फूलों के लिए क्यारी पर पैनी नज़र रखते हैं।

सोमवार, 19 अप्रैल

आज सुबह नन्हे बच्चों ने एक नाटकीय खेल खेला। हमने अपनी मेज़ें रेल डिब्बों की तरह जोड़ दीं। एण्ड्रयू इंजिनियर बना, विलियम टिकट बाबू और फ्रेड कंडक्टर। बच्चों को इसमें इतना मज़ा आया कि उन्होंने यह खेल शारीरिक शिक्षा के पीरियड में फिर से खेलने की अनुमति चाही।

मंगलवार, 20 अप्रैल

छोटे बच्चों ने कल के रेलगाड़ी खेल पर बात की। हमने तय किया कि उसे फिर खेलने से पहले हम अपनी रेलयात्रा पर कुछ वार्तालाप की योजना बनाएँगे। मार्था ने कहा कि हमारा रेल-खेल इसलिए अटक गया था क्योंकि यात्रियों के सवालों का कोई जवाब नहीं दे पाया था। फ्रेड ने सुझाया कि हमें जवाब ढूँढ लेने चाहिए। बच्चों ने कहा कि अगर हम रेल कम्पनियों द्वारा भेजी गई पुस्तिकाएँ पढ़ लें तो हमें जवाब मिल जाएँगे। हम तीन समूहों में बँट गए ताकि हम सीटियों, रसोईघर और भोजन कक्ष के बारे में अधिक जानकारी इकट्ठा कर सकें क्योंकि इन्हीं तीनों में बच्चों की रुचि सबसे ज़्यादा थी। एण्ड्रयू, एलेक्स और गस ने अपनी ट्रेन पुस्तिकाएँ निकालीं और यों बैठे कि उनके काले बाल आपस में छू रहे थे। बाद में एण्ड्रयू ने कहा, "अच्छा हुआ हमने सीटियों के बारे में फिर से पढ़ा। कल हमने काफी गलतियाँ की थीं।"

शुक्रवार, 23 अप्रैल

एक बढ़िया दिन के अन्त में उसे मटियामेट करने को कुछ तो होना ही था। बच्चे बस का इन्तज़ार कर रहे थे और इस बीच थॉमस ने रैल्फ को गाली दी। रैल्फ का खोपड़ा सटका और उसने थॉमस की नाक पर मुक्का जड़ दिया। वह यह देखने के लिए रुका नहीं कि इसके बाद क्या हुआ। थॉमस की नकसीर फूट गई। मैंने उसको सम्हाला, उसकी मदद की और कहा कि यद्यपि जो रैल्फ ने किया वह गलत था, पर अगर थॉमस दूसरों को गाली देता रहेगा तो ऐसा पलटवार हो सकता है। थॉमस का स्पष्टीकरण था, "पर उसने मुझे गुस्सा दिलाया था।"

मंगलवार, 27 अप्रैल

थॉमस कल स्कूल नहीं आया था और मैंने रैल्फ को यह बताने की कोशिश की कि जो कुछ उसने किया था उसके नतीजे बड़े गम्भीर हो सकते हैं।

आज सुबह श्रीमती लैनिक का पत्र मिला कि उन्होंने थॉमस और रैल्फ के बीच हुई घटना की सूचना राज्य पुलिस को दे दी है। मैं बहुत दुखी हुई। इस परिवार को यहाँ आए दो माह ही हुए हैं और मैं श्रीमती लैनिक से परिचित होने का समय तक नहीं निकाल पाई हूँ। अगर मैं यह कर पाती तो शायद बात यहाँ तक न पहुँची होती। उन्होंने पत्र में लिखा था कि वे रैल्फ को बखूबी जानती हैं, कि कोई भी उसे काबू में नहीं रख सकता, और कि उसका पिता उसे सुधारने के लिए कुछ करने वाला नहीं है। उन्होंने मुझे दोष नहीं दिया बल्कि लिखा कि वे मेरी मदद ही कर रही हैं। मेरी मदद! काश वे जानती होतीं कि मैं किस तरह रैल्फ पर काम करती रही हूँ। हो सकता है कि मेरी साल भर की मेहनत पर पानी फिर जाए।

मैंने तय किया कि मुझे रैल्फ को बात बतानी ही होगी। मैंने रैल्फ को खत की वे तमाम बातें बताईं जो मुझे लगा कि उसे जाननी चाहिए। हमने तय किया कि बेहतर होगा कि रैल्फ और मैं उसके पिता से बात कर लें, पेशतर इसके कि कोई पुलिसवाला उनसे बात करे। मैंने रात को जोन्स परिवार के साथ खाना खाया और खाने के बाद हम तीनों ने मंत्रणा की। मैंने श्री जोन्स को तथ्य बताए और तब उन्होंने रैल्फ से बात की। मुझे लगा कि उन्होंने स्थिति को सम्हाल लिया और रैल्फ को अच्छी सलाह दी। श्री जोन्स ने मुझे आने के लिए धन्यवाद दिया और कहा कि वे अब भावी घटनाओं के लिए तैयार हैं। रैल्फ भी कृतज्ञ था। वह मुझे गाड़ी तक छोड़ने आया, जो उसने पहले कभी नहीं किया था।

बुधवार, 28 अप्रैल

आज सुबह एक पुलिस अधिकारी आया। पहले मैंने उससे बात की और स्थिति समझाई और तब उसने रैल्फ से बात की। आशा है अब यह मामला खत्म हो जाएगा और रैल्फ इस अनुभव से सीख लेगा।

आज छोटे बच्चों ने बड़ी देर तक इस विषय पर बात की कि भाप का इंजिन कैसे चलता है, और उन्हें खूब मज़ा आया! एल्बर्ट ने बड़ी कक्षा की विज्ञान की किताब के एक चित्र के सहारे यह बताया कि इंजिन के पहिए कैसे घूमते हैं! उसने देर तक चित्र को देखा था और बार-बार पढ़कर समझा था ताकि सरल और सटीक शब्दों में वह समूह को यह प्रक्रिया बता सके। जब रेलगाड़ी का खेल हुआ तो एल्बर्ट इंजिनियर बना और उसने जिज्ञासु सवारियों के सवालों का

जवाब दिया। बाद में उन्होंने अपने खेल में रसोई और भोजन कक्ष के दृश्य भी जोड़ दिए।

बड़े बच्चों ने आज बड़ी मेहनत से हमारे कस्बे के शुरुआती दिनों की कहानियाँ लिखीं। उन्होंने अब तक यह जानने की कोशिश की है कि पायोनियरों के घर कैसे होते थे, वे कैसे कपड़े पहनते थे, उन दिनों दवा-दारू, इलाज की क्या व्यवस्था थी, स्कूल कैसे थे, धर्म का स्वरूप क्या था और वे लोग अपना मनोरंजन कैसे करते थे। संग्रहालय में अब उन्नीस वस्तुएँ हैं। लड़कियों ने अपने नमूने बना लिए हैं। लड़कों ने कॉनेस्टोगा गाड़ी, स्टेजकोच और लट्ठे से बने केबिन के अनगढ़ नमूने बनाए हैं। एना ने मलमल के कपड़े पर दीवार पर लटकाने वाला अपना चित्र बनाया है और उस पर क्रेयॉन के रंग लगाए हैं। चित्र तैयार है, बस उसके पीछे कपड़े की एक तह और लगनी है। सोफिया ने इसी तरह का 3' x 6' का विशाल चित्र बनाया है जिस पर पायोनियर जीवन का वर्णन है। समूह के कई बच्चे उसमें रंग भरने में मदद कर रहे हैं।

गुरुवार, 29 अप्रैल

आज स्कूल के बाद हमारी नियमित बैठक में आठ माताएँ आईं। हमने अगले वर्ष के गर्म मध्याह्न भोजन कार्यक्रम पर चर्चा की। वे गर्मियों में सड़क के उस तरफ स्कूल के सामने वाली पड़ोसिन को तब सूचना दे दिया करेंगी जब भी उनके पास अतिरिक्त सब्ज़ियाँ होंगी। फिर वे पड़ोसिन कुछ माताओं और बड़ी लड़कियों को बुलाकर सब्ज़ियों को डिब्बाबन्द कर देंगी। माताएँ इस काम को बारी-बारी करेंगी।

गुरुवार, 10 जून

पिछले महीने इतनी व्यस्तता रही कि कुछ काम हाशिए पर खिसकाने पड़े। उनमें से एक डायरी लिखना भी था। डायरी लिखना अन्य गतिविधियों के तात्कालिक दबावों के कारण वाकई एक विलास-सा लगने लगा था। यह सच है कि घटनाक्रम को बाद में यादकर लिखना विश्लेषण और मूल्यांकन की दृष्टि से इतना सहायक नहीं होगा, फिर भी लगता है कि दर्ज की गई अन्तिम घटना के बाद की घटनाओं का सार-संक्षेप रिकॉर्ड के लिए तो दर्ज कर ही लेना चाहिए।

बच्चों ने अपने कठपुतली प्रदर्शन पर बड़ी मेहनत की। श्री विल्सन ने एक ऐसा

मंच बनाने में लड़कों की मदद की जिसे सरकाया जा सकता था। उन्होंने लड़कों को पर्दों और दृश्यों के लिए फ्रेम बनाना भी सिखाया और यह भी कि प्रकाश व्यवस्था कैसे की जाती है। लड़कियों ने मलमल के नए पर्दे बनाए। लड़कों ने विभिन्न दृश्यों के चित्र बनाए तथा अन्य सज्जा सामग्री तैयार की और कठपुतलियों की डोर के लिए लकड़ी के हत्थे भी तैयार किए। बच्चों ने कठपुतलियों को नचाने का खूब अभ्यास किया। वे उन पुतलियों में रम गए और कठपुतलियाँ जीते-जागते इन्सानों में तब्दील हो गईं।

नन्हों ने अपनी हाथ पुतलियों को चलाने का खूब अभ्यास किया और अपने प्रदर्शन को सही किया। 21 मई को बच्चों ने काउंटी उपलब्धि दिवस कार्यक्रम में माता-पिता व शिक्षकों के बड़े समूह के समक्ष अपने कठपुतली नाटक प्रस्तुत किए। 26 मई को उन्होंने शाला भवन में वही कार्यक्रम फिर से दिखाया। तब से उस प्रदर्शन की ख्याति फैल गई है और जो लोग उसे देख नहीं पाए हैं वे पूछ रहे हैं कि क्या हम इसे अगले साल फिर से दिखाने वाले हैं।

इस माह हमने सात पृष्ठों का अखबार प्रकाशित किया, इस साल का तीसरा अखबार।

और, जैसे कि हमारे पास करने के लिए काफी नहीं था, हमने वार्षिक कस्बाई खेल दिवस के लिए एक प्रस्तुति तैयार की। हर साल कस्बे के दोनों स्कूलों के विद्यार्थी और शिक्षक साथ मिलकर खेल दिवस मनाते हैं। दोपहर बाद होने वाले मनोरंजन कार्यक्रम में दोनों स्कूल हिस्सा लेते हैं। इस साल हमने अपने कस्बे के इतिहास की नाट्य प्रस्तुति की और अभिभावकों को "वैली व्यू कस्बे के इतिहास के कुछ रोचक तथ्य" शीर्षक वाले एक पर्चे की स्टेन्सिल की हुई प्रतियाँ भी भेंट कीं।

इस अवधि की सबसे गहन छवि जो मेरे मन में है वह शायद पारस्परिक सहकार की है, जो हरेक काम में नज़र आता रहा। आनन्दमय, व्यस्त कार्यशाला-नुमा वातावरण शाला में बना रहा।

पिछले साल के काम को पलटकर देखती हूँ तो लगता है कि हमारे संघर्ष और वृद्धि की पीड़ाएँ निरर्थक नहीं रहीं, और कि हम सब – बच्चे, माता-पिता और शिक्षक – काम करने, खेलने-कूदने और साथ जीने के अपने अनुभवों के माध्यम से पहले से कहीं ज़्यादा समृद्ध हो सके हैं।